मूल्य : अठारह रुपये (18 00)

संस्करण : 1985 © भगवतीचरण वर्मा
राजपाल एण्ड सन्ज़, कश्मीरी गेट, दिल्ली-110006 द्वारा प्रकाशित
CHALTE-CHALTE [Radio Plays], by Bhagwati Charan Verma

चलते-चलते

भगवतीचरण वर्मा

राजपाल एण्ड सन्ज़

क्रम

रेडियो नाटक

वैज्ञानिक आविष्कारो के फलस्वरूप वर्तमान युग मे साहित्य के दो नवीन रूप प्रकट हुये हैं, उनमे एक है दूरदर्शन और दूसरा है रेडियो नाटक ।

आज की भयानक रूप मे व्यस्त और नित्य नवीन समस्याओ से उलझी हुई दुनिया मे जहां यंत्रों के साथ काम करता-करता मानव स्वय यत्र बन चुका है, ये यंत्रो पर आधारित दूरदर्शन और रेडियो नाटक हमारे दैनिक मनोरंजन से घनिष्ट रूप मे सम्बद्ध हो चुके हैं, और इसलिए दूरदर्शन एवं रेडियो नाटकों को स्वत. साहित्यिक मान्यता प्राप्त हो गयी है । विशिष्ट साहित्यकार साहित्य के इन नये रूपों को स्वीकार करने मे संकोच कर सकते हैं, पर जो सत्य है उसे स्वीकार करना ही पड़ेगा ।

दूरदर्शन हमारे प्राचीन रगमच के नाटक का वह परिवर्तित रूप है जिसमे यांत्रिक विकास की सहायता से औपन्यासिकता का समावेश हो जाता है। नाटक का सम्बन्ध अधिकतर देखने से है, और हमारे आचार्यो ने नाटक को दृश्य काव्य कहा भी है । क्या दिखाया जा सकता है और क्या नही दिखाया जा सकता, नाटक का शिल्प इन सीमाओ से बंधा है। दूरदर्शन पर नाटक के शिल्प की यह सीमाए तोड़ दी गयी है, कुछ भी ऐसा नही है जो दूरदर्शन पर न दिखाया जा सके। जो कुछ है—सागर, वन, पर्वत, आकाश—सभी कुछ दूरदर्शन पर दिखाया जा सकता है, और जो नही है, कल्पना द्वारा उसे रूप देकर तथा कृत्रिम उपायों से उसकी रचना करके उसे भी दिखाया जा सकता है।

लेकिन यहा हमे यह भी समझ लेना पड़ेगा कि दूरदर्शन का विकास वस्तु जगत के निकट कम है । मनुष्य पर दूरदर्शन के प्रभाव का माध्यम

आंख है । नाटक को दृश्य काव्य कहा ही गया है, पर जहा नाटक मे देखने के साथ सुनने की प्रक्रिया भी उतनी ही महत्वपूर्ण है क्योंकि अपनी सीमाओ के कारण रंगमच के दृश्य पूर्ण रूप से प्रभावोत्पादक नही हो सकते, वहा दूरदर्शन मे दृश्यो को पूर्ण रूप से प्रभावशाली बनाने के लिये अत्यधिक महत्व देना स्वाभाविक हो जाता है । इसलिए यह कहना अनुचित न होगा कि दूरदर्शन का विकास वस्तु-जगत के निकट अधिक है, भावना जगत के निकट है ही नही । जो भी चीज आंखो के माध्यम से मन पर प्रभाव डालती है वह भौतिक अधिक होगी, मानसिक कम । दूरदर्शन मे नाटक का शिल्प-पक्ष बहुत अधिक उन्नत हो गया है, लेकिन यह शिल्प-पक्ष भी यान्त्रिक है, कलात्मक नही है, पर उसका भावना पक्ष उपेक्षित पडा रहा ।

रेडियो नाटक दूरदर्शन की अपेक्षा साहित्य का अधिक मौलिक रूप है, क्योंकि नाटक इसके आने के पहले तक केवल दृश्य ही माना जाता था, रेडियो नाटक के आने के बाद नाटक मे उसके दृश्य होने का अवयव आवश्यक नही रहा । रेडियो नाटक मे वस्तु जगत से ऊपर उठकर विशुद्ध भावना जगत मे आना पड़ता है । दृश्य के गुण की अनुपस्थिति रेडियो नाटक की सबसे बडी कमजोरी है, पर यही कमजोरी उसके शुद्ध काव्य बन सकने में बहुत बड़ा बल भी है, क्योकि रेडियो नाटक मे भावना पक्ष रंगमच के नाटक की अपेक्षा अधिक शक्तिशाली है ।

रेडियो नाटक का प्रभाव मन पर श्रवण के माध्यम से पड़ता है और श्रवण का गुण है ध्वनि को ग्रहण करना । ध्वनि के दो रूप माने गये है, शब्द और स्वर। नाटक में प्रधानता स्वर की नही है, शब्द की हैं, इसलिए रेडियो नाटक मे शब्द की महत्ता अधिक है और यह शब्द शुद्ध साहित्य है क्योकि शब्द मे निहित भावना सर्वव्यापी और सीमा से परे है ।

रेडियो नाटक पर अभी तक साहित्यकारों ने विशेष ध्यान नही दिया है । नवीनता को स्वीकार करने मे हिचकना—यह मानव का स्वभाव है । रेडियो नाटक केवल श्रव्य है और इसलिए वह शुद्ध कव्य का एक नवीन रूप है जिसका शिल्प कव्य के शिल्प से थोडा सा भिन्न है । जहा शुद्ध कव्य मे एक विस्तृत औपन्यासिकता है, सुन्दर वर्णन है, कल्पना की व्यापकता है, वहां रेडियो नाटक केवल कथोपकथन मे सीमित है । कव्य

को कथोपकथन में बद्ध और सीमित कर देना परिश्रम का काम है, इसके लिए कलाकार में एक विशेष प्रकार की मानसिक प्रक्रिया की आवश्यकता होती है।

प्रश्न यह है कि इस प्रकार कथ्य को सीमित करना कहां तक उचित है और इस प्रकार सीमा में बंधे हुए कथ्य का जनता पर कैसा प्रभाव पड़ेगा तथा कैसा स्वागत होगा? मैं यहां इस प्रश्न का उत्तर देने का प्रयत्न करूंगा।

मेरा मत है कि आज की अत्यधिक व्यस्त दुनिया में लोगों के अन्दर काल्पनिक विस्तार और प्रसार के प्रति एक प्रकार की अरुचि सी उत्पन्न होती जा रही है। महाकाव्यों और बहुत बड़े उपन्यासों का युग अब नहीं है, अबाध गति और व्यापक अशान्ति से प्रेरित मानव के पास इतना समय कहां है कि वह अधिक काल तक दत्तचित्त होकर साहित्य का मनन करे। अवकाश के कुछ इने-गिने क्षणों में उसे जो मिल गया, वही उसके लिए बहुत है। इसलिए साहित्य को जन के पास पहुंचने के लिए अपना कलेवर बदलना पड़ेगा। आधे घण्टे या एक घण्टे के रेडियो नाटक में यदि साहित्यकार अपनी बात कह सके तो उसका स्वागत होगा।

कथोपकथन को साहित्य में अनादि काल से शक्तिशाली माध्यम समझा गया है क्योंकि नाटक हमारे साहित्य का अति प्राचीन रूप है। कालिदास आदि अनेक संस्कृत के अमर साहित्यिकों ने अपना श्रेष्ठतम साहित्य नाटकों के माध्यम से दिया है। यह ठीक है कि उन्होंने नाटकों में दृश्य का अवलम्ब लिया है, पर उनके वे नाटक उच्चकोटि के पाठ्यग्रंथ हैं।

रेडियो नाटक उतनी ही सुन्दर पाठ्य सामग्री दे सकता है जितनी सुन्दर पाठ्य-सामग्री संस्कृत के उन अमर कवियों ने अपने नाटकों के माध्यम से दी है, और मेरा मत तो यह है कि सम्भवतः उससे भी अच्छी पाठ्य-सामग्री रेडियो नाटक में आ सकती है क्योंकि जहां रंगमंच के नाटकों में दृश्य पक्ष होने के कारण शुद्ध शब्दों में निहित भावना पक्ष में कहीं-कहीं अवरोध हो सकता है, वहां रेडियो नाटक में शब्दों वाला भावना पक्ष निर्बाध चलता है।

साहित्य वाली भावना देश और काल की सीमाओं से परे है, लेकिन

साहित्य का शिल्प देश और काल की सीमा से बद्ध हुआ करता है। इसलिए आज के युग में रेडियो नाटक के शिल्प में आवश्यक विस्तार एवं प्रसार का कोई स्थान नहीं, रेडियो नाटक में एक सुगठित और संक्षिप्त कथानक ही प्रभावशाली हो सकता है।

मेरा ऐसा अनुभव है कि रेडियो नाटक में गद्य की अपेक्षा पद्य अधिक सफल होता है क्योंकि रेडियो नाटक पूर्णतः ध्वनि पर अवलम्बित है और ध्वनि के एक भाग शब्द को ध्वनि के दूसरे भाग स्वर से अधिक-से-अधिक सहायता मिल सकती है। विशुद्ध स्वर की कला संगीत है, और संगीत का आधार लय है। पद्य का आधार भी लय ही माना जाता है और इसलिए वे नाटक जिनमें संगीत का सहयोग अधिक होता है, प्रायः सफल होते हुए देखे गये हैं।

शक्तिशाली साहित्यिक नाटकों के अभाव में रेडियो नाटक के नाम पर रेडियो द्वारा अभी तक संगीत-रूपक प्रसारित होते हैं या फिर हास्य रस की लतीफेबाजी का सहारा लिया जाता है। मनोरंजन के नाम पर हास्य रस की लतीफेबाजी या संगीत रूपक कुछ समय के लिए ठीक हो सकते हैं, पर उदात्त भावनाओं से युक्त गम्भीर समस्याओं पर लिखे गए नाटकों का अपना एक विशिष्ट स्थान है और आज के मानसिक विकास में रत मानव की भूख इन हल्के-फुल्के लतीफों तथा समय-असमय के संगीत से नहीं मिट सकती।

रेडियो पर संगीत का एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम रहता है, इसलिए मेरे मत में संगीत रूपकों को रेडियो नाटक का भाग तब तक नहीं माना जाना चाहिए जब तक वह संगीत कवित्वमय न हो। इसलिए मैं जिसे रेडियो नाटक कह सकता हूं वह पद्य-रूपक है पर इन पद्य-रूपकों में संगीत और पद्य का जो आधार लय अथवा छन्द है, उसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती। इन पद्य-रूपकों में जब तक श्रेष्ठ कविता न हो तब तक वे निःसार होंगे। यही हास्य रस के सम्बन्ध में कहा जा सकता है। हास्य के चुटकुले नाटक नहीं हैं। नाटक में हास्य का काम कहानी तत्व को पुष्ट करना होता है।

रेडियो नाटक सफलता तब प्राप्त कर सकते हैं जब वे उच्चकोटि के

कलाकारों द्वारा लिखे जायें और विशेष रूप से रेडियो की सीमाओं एवं आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर लिखे जायें। आज रेडियो द्वारा प्रसारित जो नाटक सुनने को मिलते हैं उनमें उन नाटकों की संख्या नगण्य-सी है जो केवल रेडियो के लिए ही लिखे गए हों। जो कुछ थोड़े से इने-गिने नाटक केवल रेडियो के लिए लिखे गए हैं वे प्रायः नवीन लेखकों द्वारा लिखे गए हैं। रेडियो नाटक के सम्बन्ध में प्रचलित भ्रान्त धारणा को दूर करके ही रेडियो नाटक द्वारा शक्तिशाली साहित्य का सृजन हो सकता है। यह जो बड़े-बड़े साहित्यिकों के उपन्यासों एवं कहानियों के रेडियो रूपान्तर आते हैं उनका शिल्प बड़ा शिथिल होता है क्योंकि रूपान्तर करने वाले लोग एक प्रकार के यांत्रिक शिल्प का सहारा लेते हैं। नुस्खों के आधार पर वे रूपान्तर तैयार करते हैं, कलाकार के शिल्प के वहां दर्शन नहीं होते। शिल्प की यांत्रिकता का यह दोष अकेले चलचित्रों का ही अभिशाप नहीं है, यह रेडियो में भी आ गया है पर इस दोष का उत्तरदायित्व, कम-से-कम रेडियो-नाटक के सम्बन्ध में अच्छे रेडियो नाटकों के अभाव पर है।

इस स्थान पर रेडियो नाटक के शिल्प के सम्बन्ध में भी कुछ कह देना आवश्यक होगा। रंगमंच के नाटक की भांति रेडियो नाटक में भी एक कहानी होती है और वह कहानी पात्रों के कथोपकथन द्वारा कही जाती है। पर रेडियो नाटक के पात्र श्रोताओं के सामने नहीं होते; ये पात्र जो कुछ करते है वह श्रोताओं को नहीं दिखता, पात्रों एवं पात्रों के कर्मों का संकेत केवल ध्वनि से ही देना होता है। कितने पात्र किसी दृश्य में उपस्थित है यह केवल ध्वनि अथवा शब्द संकेत से ही प्रकट किया जा सकता है। सारांश यह है कि जो कुछ श्रोता पर प्रकट करना है वह सब ध्वनि अथवा शब्द संकेत से ही प्रकट किया जाना चाहिए। इसलिए रेडियो नाटक प्रस्तुत करने में लेखक के साथ निर्देशक का भी बहुत बड़ा दायित्व है। अच्छा रेडियो नाटक वह है जिसमें निर्देशक को अपने मन से कम-से-कम करना पड़े, अर्थात् लेखक लिखते समय रेडियो की आवश्यकताओं एवं सीमाओं का ध्यान रख सके।

अक्सर मुझे ऐसे रेडियो नाटक देखने को मिले हैं जिसमें पन्द्रह, बीस

या पच्चीस चरित्र आते है । ऐसे रेडियो-नाटकों की सफलता अनिश्चित है । श्रोता के मस्तिष्क पर नाटक को समझने मे कम-से-कम बोझ पड़े, केवल शब्दों एवं ध्वनि की सहायता से पूरी कहानी और उस कहानी का प्रत्येक कर्म-श्रोता की समझ मे आ जाए, यही रेडियो नाटक की सफलता है इसलिए प्राय: वही रेडियो नाटक अधिक सफल होते हैं जिनमे इने-गिने ही चरित्र हो ।

जैसा मैं कह चुका हूं, रेडियो नाटक में प्रधानता शब्दों को मिलती है, और उन शब्दों को स्पष्ट होना चाहिए । श्रोता के पास इतना समय नही और न उसे इतनी सुविधा है कि वह किसी पर मनन करके उसे समझे । एक के बाद एक वाक्य चले आते हैं और इसलिए श्रोता की समझ मे जो कुछ तत्काल आ गया वही उसके लिए महत्व की चीज है, जो उसकी समझ मे नही आया वह उसके लिए बेकार है । लक्षणा अथवा व्यंजना की अपेक्षा साहित्य का प्रसाद गुण रेडियो नाटक में सबसे अधिक महत्व का है और इसीलिए मैं रेडियो नाटक के शिल्प को इतना अधिक महत्व देता हूं । साहित्य के इस नवीन रूप का शिल्प बड़ा सीधा-सादा है, लेकिन काफी कठिन और साध्य है । एक समर्थ कलाकार ही इस शिल्प मे प्राण प्रतिष्ठा कर सकता है ।

रेडियो नाटक के विरोध मे एक तर्क मुझे कुछ साहित्यकारों द्वारा यदा-कदा सुनने को मिला है, और वह तर्क ऊपरी ढंग से ठीक भी दिखता है, इसलिए इस स्थान पर उस तर्क का उत्तर दे देना मैं आवश्यक समझता हू । कुछ दिनों पहले तक रेडियो नाटक की समय अवधि पन्द्रह मिनट तक से आधा घण्टा तक रहती थी, अब वह समय अवधि बढ़ा कर एक घण्टा तक कर दी गयी है, पर रेडियो में तीस मिनट का नाटक आदर्श नाटक माना जाता है ।

इस प्रथा के पीछे एक मनोवैज्ञानिक सत्य है जिसे प्रत्येक साहित्यकार को समझ लेना चाहिए । रेडियो नाटक में केवल कथोपकथन चलता है, ऐसी हालत मे जो कहानी रंगमंच पर तीस मिनट में कही जाती है, वही कहानी रेडियो नाटक में प्राय: पन्द्रह-बीस मिनट मे कह दी जाती है । रेडियो नाटक की नवीन परम्परा स्थापित करने के समय इस शिल्प के

अभाव में कृत्रिम शिल्प नाटकों का सहारा रेडियो वालों को लेना पड़ा और कृत्रिम शिल्प के नाटक, यदि उनकी समय अवधि अधिक हो, तो श्रोता को असर जाते हैं। पर आज जब रेडियो नाटक स्थापित हो गया है, रेडियो पर एक घण्टा और सवा घण्टा के रेडियो नाटकों का स्वागत होगा। साहित्यकारों का यह कहना तो ठीक है कि पन्द्रह या तीस मिनट का रेडियो नाटक एकाकी नाटक की कोटि का होगा, पर मेरे मत से यदि साहित्यकार एक घण्टे के रेडियो नाटक लिखें तो वे रंगमंच के दो घण्टे को नाटकों की बराबरी के होंगे और उनकी आपत्ति निराधार साबित होगी।

अब मैं रेडियो नाटक के भविष्य पर ही कुछ कहना चाहूंगा। रेडियो दुनिया का सब से सस्ता मनोरजन है और इस मनोरंजन पर नियंत्रण होने के कारण यह सब मे स्वस्थ मनोरंजन भी है। मुझे तो ऐसा दिखता है कि निकट भविष्य मे रेडियो नाटक चलचित्रो एव साधारण नाटकों को हटा कर मानव जीवन में अपने को पूर्णत: स्थापित कर लेगा। दिन भर का थका हुआ आदमी अपने परिवार एवं इष्ट मित्रो के साथ घर पर बैठकर, जब एक नाटक सुन सके तो उसे बाहर जाकर और रुपया खर्च करके अन्य चलचित्रों एव नाटको से मनोरजन करने की आवश्यकता ही क्या है? जैसे-जैसे श्रेष्ठ कला से युक्त नाटकों का प्रसार बढ़ता जायेगा, रेडियो नाटकों के प्रति साधारण जनता की रुचि भी बढ़ती जायेगी।

□

रुपया तुम्हें खा गया

(फेड इन) बाहर जोरो का तूफान। तेज हवा चल रही है। रह-रह कर बिजली बहुत ज़ोर से कड़क उठती है। नेपथ्य में एक भारी-सा करुण संगीत चल रहा है!

मानिकचंद : (एक कमजोर और हल्की आवाज मे थोडा-सा चौक कर) कौन ? रानी ? रानी ?

नर्स : कहिये।

मानिकचंद : तुम कौन हो···बोलो। तुम कौन हो ?

नर्स : नर्स···श्री मान।

मानिकचंद : नर्स। हां, नर्स। याद आ गया। तो बीमार हूं। अच्छा एक गिलास पानी। ···(टेलीफोन की घण्टी) हलो··· क्या कहा सोना एक सौ चौदह···बीस हजार तोला बेच दो···ठीक-ठीक। (रिसीवर रखने की आवाज) (फिर रिसीवर उठाता है और डायल करता है)

नर्स : पानी, श्री मान!

मानिकचंद : जरा ठहरो। ···हलो, शिव कुमार जी, टाटा डेफर्ड··· हां, ठीक···चार सौ शेयर्स ले लो। इण्डियन आइरन··· कल भाव गिरने वाला है···बेच दो···हां, सभी शेयर्स बेच दो। जै राम जी की। (रिसीवर रखता है)

नर्स : पानी, श्रीमान!

मानिकचंद : नहो, प्यास नहीं है! नर्स! अब नहीं चढ़ेगा···एक

सौ आठ से एक सौ चौदह···इतना मंहगा हो गया सोना। तीन दिन में एक लाख बीस हजार···कौन···? ···मदन-मदन···

नर्स : कहिये।

मानिकचंद : ओह···तुम। हां, मैं बीमार हूं। डॉक्टरों ने उठने से मना कर दिया है, मुझे आराम चाहिए। आराम। नर्स।

नर्स : श्रीमान।

मानिकचंद : कितना बजा है?

नर्स : चार बजकर दस मिनट।

मानिकचंद : चार बज कर दस मिनट। तो रानी आज भी नहीं आयी। उफ्। कितनी भयानक वर्षा हो रही है··· (मोटर का हार्न) कौन हो सकता है? मदन। उसे भी तो अपनी बीमारी की खबर दे दी है, लेकिन उसकी गाड़ी का तो कोई वक्त नहीं है। फिर कौन हो सकता है?

(दरवाजा खुलता है और बन्द होता है। पैरों की आवाज)

नर्स : यह टेम्प्रेचर चार्ट है डॉक्टर।

डॉक्टर : नमस्कार, श्री मानिकचंद जी।

मानिकचंद : नमस्कार, डॉक्टर साहब। इस भयानक वर्षा में भी आप चले आए।

डॉक्टर : जी हां, जहां कर्तव्य का प्रश्न है वहां क्या वर्षा और क्या तूफान? लेकिन वाकई इस वर्षा ने प्रलय का रूप धारण कर रखा है···न जाने कितने पेड़ गिर पड़े हैं, कहीं-कहीं सड़कों पर घुटनों पानी हो गया है और कोई होता तो घर से निकलने पर सोचता।

मानिकचंद : और कोई होता तो घर से निकलने पर सोचता। बड़ी दया की आपने मेरे ऊपर डॉक्टर साहब (टैलीफोन

की घण्टी बजती है) हलो, गम्भीरमल जी, हां···पांच रुपये की गांठ···पचास हजार गांठ चाहते हैं···अच्छा, तो पहले ढाई लाख रुपया मुझे अलग से दे दीजिए··· सौदा हो जायेगा। घर पर ही हूं···चले आइये

(विराम)

सुना डॉक्टर! यह गम्भीरमल भी मेरे ऊपर दया करने के लिए इस भयानक वर्षा में आ रहा है (हंसता है) पचास हजार गांठ खरीद रहा है···कम-से-कम दस रुपया फी गांठ बचायेगा···ढाई लाख रुपया पाने के लिये आ रहा है।

(बिजली कड़कने की आवाज)

सुन रहे हो डॉक्टर कितनी जोर की बिजली कड़की। इस तूफान की जरा भी परवाह न करके मेरे यहां चला आ रहा है।

डॉक्टर : जी हां,···लेकिन मैं समझता हूं कि आप···

मानिकचंद : आराम करूं···टेलीफोन पर बात करके कारबार न करूं। लोग रुपया देने आयें तो रुपया न लूं (हंसी) अच्छा डॉक्टर। सच-सच बतलाना···जो तुम इस तूफान और वर्षा में मेरे यहां इस समय आये हो···क्या अपनी फीस के लिए नहीं आये हो?

डॉक्टर : शायद आप ठीक कहते हैं।

मानिकचंद : शायद नहीं···सोलह आना ठीक कहता हूं। कोई किसी पर दया नहीं करता डॉक्टर···दूसरे पर दया करना प्रकृति का विधान ही नहीं है। हम जो कुछ करते हैं वह सब अपने लिए···कौन?

डॉक्टर : कोई तो नहीं।

मानिकचंद : कोई नहीं (हंसी) कोई नहीं। मुझे कितने दिन हो गए बीमार हुए डॉक्टर।

डॉक्टर : करीब दस दिन।

मानिकचद : दस दिन । दस दिन से इस कमरे मे अकेला बन्द हूं । दो नर्सें इस कमरे मे रहती हैं एक दिन मे, एक रात मे । डॉक्टर ! ···क्या तुम समझते हो इन नर्सों की मुझे आवश्यकता है ?

डॉक्टर : आप क्या समझते हैं ?

मानिकचद मैं क्या समझता हू···कुछ नही डॉक्टर ! ···इतना सोचा···इतना सोचा···लेकिन समझ मे आज तक कुछ नही आया और फिर धीरे-धीरे सोचना भी बन्द कर दिया । लेकिन इन दस दिनो के अन्दर···।

डॉक्टर . क्यो कहते-कहते रुक क्यो गये ! ··

मानिकचद : समझ मे नही आता किस तरह अपनी बात कहू । इन दस दिनो के अन्दर कुछ अजीब सा अनुभव हुआ मुझे । मैं समझता हू कि एक नर्स कुछ थोडी देर के लिए तो इस कमरे के बाहर जा सकती है ।

डॉक्टर : हा···हा ··क्यो नही । नर्स ।

नर्स : डॉक्टर ।

डॉक्टर : थोडा सा पानी गरम करने को रख दो जाकर···और जब तक मैं न बुलाऊं तब तक न आना । (नर्स के पैरों की आवाज) हा···अब कहिये ।

मानिकचद . डॉक्टर इन नर्सों की उपस्थिति मुझे अब भयानक··· रूप से असह्य हो गयी है ।

डॉक्टर : क्यो, क्या यह लोग ठीक तौर से काम नही करती ?

मानिकचंद : काम । (रूखी हंसी) शायद इनके समान कुशलतापूर्वक काम करने वाला मुझे दूसरा न मिलेगा । हर काम ठीक समय पर, ठीक तरीके से । यन्त्र की तरह लगा-तार यह काम करती रहती हैं ।

डॉक्टर : फिर आपको शिकायत क्या है ?

मानिकचद : शिकायत ! डॉक्टर,तुम जानते हो यन्त्र मे प्राण नहीं होते (टेलीफोन की घण्टी) हलो,-मदन !. तुम,कहा

से बोल रहे हो ? कलकत्ता एयरोड्रोम से—दिल्ली आ रहे हो ? प्लेन अभी आया है—एक प्लेन छोड़ नहीं सकते ? हां, हां, दिल्ली में मिलो कोटा की बात करनी है ''नहीं-नहीं'''कोई ऐसी बात नहीं'''तबीयत वैसी ही है, अभी बुखार है। एक हफ्ता लगेगा। ठीक है, काम पूरा करके लौटना (रिसीवर रख देता है) सुना डॉक्टर, मेरा लड़का मदन ''वह भी यन्त्र बन गया है, भावना हीन, निष्प्राण, वह जानता है कि मैं बीमार हूं'''लेकिन उसके पास एक प्लेन छोड़ने का समय नहीं है'''पांच लाख के वारे न्यारे का सवाल है न (हंसी)।

डॉक्टर : आप टेलीफोन इस कमरे से हटवा दें।

मानिकचंद : टेलीफोन इस कमरे से हटवा दूं'''क्या कहते हो डॉक्टर, इस कमरे में अपने को जिन्दा दफन कर लूं। जानते हो, एक मौत का सा सन्नाटा कभी-कभी इस कमरे में मैं अनुभव करने लगता हूं।

डॉक्टर : लेकिन'''।

मानिकचंद : मैं जानता हूं तुम क्या कहना चाहते हो। लेकिन मैं कहता हूं'''मैं इस कमरे में नितान्त अकेला हूं। यह नर्स जो रुपयों के लिए मेरी देख-भाल करती है, जो अपने पीले और मुरझाये हुए होंठों पर एक कृत्रिम मुस्कान का प्रदर्शन करती है, जो मेरे नाराज होने पर और गाली देने पर बुरा नहीं मानती'''यह मुझे प्रेत लोक की छाया की भांति दिखने लगती है'''और उस समय'''उस समय मैं इस टेलीफोन का'''रिसीवर उठाता हूं'''मैं शेयर खरीदना देखता हूं, मैं अपने मित्रों की गति'''विधि का पता लगाता हूं (उत्तेजना)।

डॉक्टर : आप अधिक उत्तेजित न हों।

मानिकचंद : मैं उत्तेजित नहीं हूं डॉक्टर, इन दस दिनों में लेटे-लेटे

टेलीफोन पर दस लाख पैदा किये ।

डॉक्टर : दस लाख ।

मानिकचंद : बहुत बडी रकम है सोचते होंगे ?
(टेलीफोन की घण्टी बजती है)

मानिकचंद : हलो…ट्रक…मसूरी से…हां…रानी…हां, अभी तबीयत वैसी ही है…कोई फिक्र की बात नही…। हां …हां, कलाकेन्द्र का उद्‌घाटन…कर लो। अगले मंगल को…आज से नौ दिन…तभी आ जाना…कोई तकलीफ नहीं। दस हजार कलाकेन्द्र को…दस हजार का दान देना है…दे देना।
(रिसीवर रख देता है)

मानिकचंद : दस हजार (हंसता है) सुना डॉक्टर कितनी छोटी रकम है यह दान मे इतनी रकम दी जा सकती है।… लेकिन एक दिन उसी दस हजार ने मेरे भाग्य को बदला था…मुझे जमीन से उठा कर आसमान पर चढा दिया था।

डॉक्टर : अब आप मुझे आज्ञा दीजिए…आज आप काफी बात कर चुके।

मानिकचंद : नहीं डॉक्टर, बिना अपनी कहानी सुनाये मैं तुम्हें नही जाने दूगा…बैठो।

डॉक्टर : अच्छी बात है…आप मेरा हाथ तो छोड दीजिए।

मानिकचंद : आज से बीस वर्ष पहले की बात है…मैं उन दिनों एक फर्म में क्लर्क था। बीस रुपये महीने पाता था…बीस रुपये। रानी थी…मेरी पत्नी। मदन था…मेरा लडका। हम लोगों का छोटा-सा परिवार…कितना सुखी था।
(डिजाल्व)

मदन : मां…बाबू जी आ गये…बाबू जी आ गये…अब तो गाजर का हलुआ निकालो।

पत्नी : कितना पाजी है…अभी से बतला दिया…अरे छोड़

भी बाबू जी को'''थके हुये है'''हाथ-मुंह धो लीजिये '''मैं नाश्ता लाती हूं।

मदन : बाबू जी, दिन भर अम्मा हलुआ बनाती रही।

मानिकचंद : अच्छा।

मदन : और पकौड़ी भी बनायी है।

मानिकचंद : हां, हलुआ और पकौड़ी दोनों।

मदन : लेकिन हमें नही दिया'''खुद भी नही खाया।'''बोली, बाबू जी आएं तब।

मानिकचंद : लो, मै आ गया।

पत्नी : लीजिये नाश्ता कर लीजिए, (हंसती है) मुन्ना किशन भइया का विवाह है'''अगले माह। माता जी का पत्र आया है, और कहा है फौरन चली आऊं।

मानिकचंद : फौरन ?

पत्नी : हां'''हां। परसों तक चली जाऊंगी।

मानिकचंद : लेकिन जाना कैसे होगा'''जाने के लिये रुपये तो चाहिए।

पत्नी : हां'''और फिर छोटे भाई का विवाह है, कुछ देना लेना भी तो होगा। क्यों'''अरे आप का चेहरा कितना उतरा है'''क्या बात है ?

मानिकचंद : कुछ नही'''यों ही जरा सर मे दर्द है।

पत्नी : लाइये सर दाब दूं'''बडी मेहनत करते हैं आप। और रुपये की चिन्ता न कीजिए'''सिर्फ यहां से जाने को किराये का प्रबन्ध कर दीजिए'''अपना एक गहना दे दूंगी।

(डिजाल्व)

मानिकचंद : अभाव था लेकिन, उस अभाव में जीवन सुखद सम्पन्न था, भावना का मधुर अस्तित्व था। क्यों डॉक्टर, मेरा वह जीवन अधिक सुखकर था या यह जीवन।

डॉक्टर : मैं कह नहीं सकता । आप अपनी कहानी कहिये ।
मानिकचंद : हां हां···कहानी ही सुनाने बैठा हूं ।

(डिजाल्व)

मैनेजर : बाबू मानिकचंद ।
मानिकचंद : मैनेजर साहब ।
मैनेजर : कैशियर साहब के सेफ में दस हजार रुपये निकल गये ··मालूम है ।
मानिकचंद : दस हजार···और सेफ से निकल गये ? ताज्जुब की बात है । चाभी तो कैशियर साहब के पास रहती है··· और सेफ न टूट सकता है···न खुल सकता है ।
मैनेजर : यही तो मैं भी कहता हूं···क्यों बाबू किशोरीलाल ?
कैशियर: साहब, मैं कसम खाकर कहता हूं कि यह रुपया यहीं के किसी आदमी ने चुराया है । जब आपने मुझे स्टेशन भेजा था, मैं गलती से सेफ की चाभी ड्राअर में भूल गया था ।
मैनेजर : इस कमरे में तीन क्लर्क बैठते हैं···भगवान दास, रामलाल और मानिकचंद···भगवान दास और रामलाल कहां है ?
मानिकचंद : वह तो छुट्टी होते ही घर चले गये । मुझे जरा फाइलें पूरी करनी थीं इसलिए रुक गया ।
मैनेजर : किशोरी लाल, मुझे अफसोस है ··यह मामला तो मुझे पुलिस में देना होगा ।
मानिकचंद : मैनेजर साहब, यह काम कैशियर साहब का नहीं हो सकता···।
मैनेजर : मैं मजबूर हूं ·· ।

(डिजाल्व)

मानिकचंद : तो डॉक्टर···इस प्रकार मैं दस हजार साफ खा गया ···। और उस बेचारे कैशियर को तीन साल की सजा भुगतनी पड़ी ।

डॉक्टर : आपकी तबीयत ठीक है न ?

मानिकचंद : (हंसता है) मैं प्रलाप नहीं कर रहा हूं, डॉक्टर···मैं केवल अपनी कथा सुना रहा हूं। मैंने नौकरी छोड़ दी···मैंने वह स्थान भी छोड़ दिया। यहां आकर मैंने एक्सपोर्ट और इम्पोर्ट का काम आरम्भ कर दिया··· जिस फर्म में मैं काम करता था वह एक्सपोर्ट और इम्पोर्ट की फर्म थी। आने के समय मैं वहां के आवश्यक कागजात की नकल लेता आया था।

डॉक्टर : आप बड़े हिम्मत वाले आदमी हैं।

मानिकचंद : हां, डॉक्टर, जीवन में सफल वही होता है जिसमें हिम्मत हो···और वह हिम्मत भी अपराध करने की हिम्मत हो। अमीर वह बन सकता है जिसका न ईश्वर पर विश्वास हो, न धर्म पर, न ईमानदारी पर। केवल एक देवता होता है उसका—पैसा।

डॉक्टर : बहुत से लोग इसे नहीं मानते।

मानिकचंद : जो नहीं मानते वे कंगाल हैं···अभावग्रस्त हैं। वे सिर्फ चीखते हैं···चिल्लाते हैं, रोते-धोते हैं। जो आदमी ईमानदारी और धर्म पर कायम रहता है वह न धर्मात्मा कहलाता है, न ईमानदार है। इज्जत और मान उसके हैं जिसके पास पैसा है।

(दूर से नर्स की आवाज)

नर्स : डॉक्टर, पानी गर्म हो गया।

डॉक्टर : अब उस पानी को ठंडा होने दो···जब ठण्डा हो जाए तब आना।

मानिकचंद : तुम बुद्धिमान आदमी हो डॉक्टर···। जब ठण्डा हो जाए तब आना, (हंसता है) तो डॉक्टर···यहां आकर मैं पैसा पैदा करने में लग गया। मैंने दिन नहीं देखा, रात नहीं देखी, मैंने धर्म नहीं जाना, ईमान नहीं जाना। मैंने पांच का माल दिया पचास वसूल किये, मैंने सोने

के दाम पर पीतल बेचा। मैंने कम्पनियां बनाई और फेल कीं, मैंने समय और परिस्थितियों का पूरा-पूरा लाभ उठाया···और मैं बढ़ता गया, बढ़ता गया।

डॉक्टर : आप पकड़े नहीं गए।

मानिकचंद : डॉक्टर, पकड़ा वह जाता है जो मूर्ख होता है, जो पैसे की ताकत का उचित उपयोग नहीं कर सकता।

डॉक्टर : मैं नहीं समझा।

मानिकचंद इतनी जरा सी बात नहीं समझे? दुनिया में कोई ऐसा नहीं जो खरीदा न जा सके। मैंने यह कभी नहीं समझा कि पैसे की आवश्यकता केवल मुझको है··· पैसे की आवश्यकता दूसरों को भी उतनी ही है जितनी मुझे है। हर एक आदमी अपने को पैसे के हाथ बेचने को तैयार है, लेकिन हरेक आदमी साहसी नहीं है। वे जो धर्मात्मा कहलाते हैं, ईमानदार कहलाते हैं··· वे कायम हैं, उनमें खुल कर देखने की प्रवृत्ति नहीं है। पर जब उनके पास पैसा स्वयं आये तब वे भी बिक जाने पर तैयार मिलेंगे।

डॉक्टर · अब, बस कीजिए।

मानिकचंद : इतने में ही घबरा गये डॉक्टर।

(द्वार खुलता है···मदन की आवाज)

मदन बाबू जी।

मानिकचंद : मदन। क्यों तुम दिल्ली नहीं गये?

मदन : इस पानी और तूफान में हवाई जहाज नहीं उड़ सकता। कितनी जोर की हवा है।

मानिकचंद : फिर?

मदन . शाम की गाड़ी से जाऊंगा···कल सुबह पहुंच जायेगी। ···अरे, आप तो बड़े कमजोर हो गये है। क्यों डॉक्टर साहब?

डॉक्टर : सेठ साहब को आराम की जरूरत है···वह करते नहीं।

मानिकचंद : मैं पूछता हूं…तुम्हीं आराम कहां कर रहे हो? डॉक्टर…इस पानी और तूफान में तुम यहां बैठे हो …अब जाओ डॉक्टर।

डॉक्टर : मदन बाबू…सेठ जी की हालत दिनों-दिन गिरती जा रही है। आप उन्हें समझाइये…इन्हें आराम की सख्त जरूरत है।

मानिकचंद (हंसता है) आराम! अच्छा, डॉक्टर कल सुबह फिर आइयेगा। नमस्कार…और नर्स से कहियेगा कि थोड़ी देर और कमरे में न आये।

(डॉक्टर के जाने की और दरवाजा बन्द होने की आवाज़)

…मदन, मुझे ऐसा लगता है जैसे इस बीमारी पर मैं विजय न पा सकूंगा…तबीयत गिरती जा रही है… गिरती जा रही है। तुमने डॉक्टर की बात सुनी।

मदन जी हां। लेकिन वह कहते हैं कि आप आराम नहीं करते।

मानिकचंद : वह बेवकूफ है…जिन्दगी को वह न समझता है न पहचानता है। जिन्दगी हलचल है…उथल-पुथल है (बिजली की कड़क) सुनते हो…बिजली कड़क रही है…पानी बरस रहा है…उस तूफान की आवाज सुनते हो, जिन्दगी उसी तूफान की तरह है और आराम… मौत का एक घुटता हुआ सन्नाटा। अच्छा अब जाओ मुझे नींद सी आ रही है। हां, गम्भीरमल आता होगा …ढाई लाख पहले ले लेना, फिर सौदे की बातचीत…

(डिजाल्व)

(सेठ जी की पत्नी का प्रवेश)

पत्नी : नर्स…सेठ जी की तबीयत अब कैसी है?

नर्स : आज रात भर सोये नहीं। न जाने क्या आप-ही-आप कहते रहे। बीच-बीच में उठकर लिखने लगते थे।

मदन : हूं, डॉक्टर अभी तक नहीं आये ?

नर्स : उनके आने का वक्त तो हो गया है, आते ही होंगे।

मदन : जब आवें मुझे खबर देना। अच्छा अब जाओ।

पत्नी : लेकिन मैं कहती हूं'''सत्तर लाख का घाटा और वह बीमारी की हालत में'''

मदन : दिमाग खराब हो गया है उनका मां। सट्टे में सत्तर लाख रुपया हार गये।

पत्नी : सट्टा जुआ है'''यह रकम हम लोगों से कानूनन नहीं ली जा सकती।

मदन : बिल्कुल ठीक'''इतनी बड़ी रकम देने के माने है हमारा दीवाला निकल जाना।

पत्नी : तुमने उन्हें यह सट्टा करने क्यों दिया ?

मदन : मैं यहां होता तो उन्हें रोकता। दिल्ली में मुझे एक ठपने का काम था, लेकिन पन्द्रह दिन लग गये (विराम) लेकिन मां आखिर तुमने तो बाबू जी की बीमारी की खबर सुनी थी 'तुम्हीं चली आतीं'''

पत्नी : मैं क्या जानती थी कि बीमारी में यह पागलपन कर डालेंगे ''

मानिकचंद : 'पागलपन' हा''हा! हा! थोड़ी-सी गलती हो गयी ''उसे पागलपन कहते हो, बेवकूफ कहीं के। मैंने पैदा किया मैंने खोया, मैंने खोया, मैं पैदा करूंगा, मैं पैदा करूंगा' 'हा'''हा ''हा'''

मदन : बाबू जी आपको तो उठना तक मना है, कमरे के बाहर क्यों चले आये ''? नर्स'''तुमने इन्हें चले क्यों आने दिया ?

मानिकचंद : इसलिए कि जो घाटा मैंने किया है उसे पूरा करना है। तुमने मेरा टेलीफोन क्यों हटवा दिया, मुझे सौदा करना है।

पत्नी : फिर वही पागलपन ''चलिये आप लेटिये चलकर।

मानिकचंद : मुझे छोड़ो, मदन···रानी, सत्तर लाख रुपये का घाटा··· ।

मदन : आप लेटिये चलकर···आपने घाटा नहीं दिया है, आप घाटा नहीं देंगे ।

(चलने की आवाज़···मानिकचंद के पलग पर लेटने की आवाज़)

मानिकचंद : मैंने घाटा नहीं दिया है···मैं घाटा नहीं दूंगा । ठीक है । मैं बीमार हूं । मेरा दिमाग खराब हो गया है··· बिल्कुल ठीक ।

पत्नी : अब आप आराम कीजिए··· ।

मानिकचंद : आराम···हां, बहुत थक गया हूं । नर्स···वह टॉनिक देना । बैठो मदन···तुम भी बैठो रानी ।

मानिकचंद : रानी···अभी तुमने कहा था कि बीमारी मे मैंने पागलपन कर डाला···तुमने ठीक कहा था । लेकिन इस पागलपन की वजह बीमारी के अलावा कुछ दूसरी भी है ।

पत्नी : वह क्या ?

मानिकचंद : उसे जानकर तुम लोगों के दिलों को एक धक्का सा लगेगा ।

मदन : नहीं, बाबू जी···आप कहिये ।

मानिकचंद : सुनना ही चाहते हो···तो सुनो । तुम जानते हो मैं करीब एक महीने अकेला इस कमरे मे बन्द रहा हूं ।

पत्नी : आप बीमार थे···लेकिन अकेले तो नहीं थे आप··· दो नर्सें बराबर आपकी सेवा कर रही थीं । डॉक्टर दोनों समय आता था, नौकर-चाकर सब मौजूद थे ।

मानिकचंद : नर्स, डॉक्टर, नौकर, हां ये सब थे···लेकिन ये मेरे कोई नहीं थे···ये सब के सब पैसे के थे । किसी को मुझसे कोई सहानुभूति नहीं थी ··मेरे प्रति इनमें से हरेक में भावना का अभाव था । ये सब के सब मेरी

सेवा, मेरी देखभाल नहीं करते थे···ये लोग सब के सब पैसे की गुलामी करते थे (अर्ध विराम)···मैं इन्हें दोष नहीं देता, दुनिया में हरेक आदमी पैसे की गुलामी करता है···उस हरेक में मैं हू, तुम हो, मदन है। क्यों मदन···मैं बीमार था और तुम उस समय पैसे की गुलामी करने के लिये कलकत्ता और दिल्ली में थे। क्यो रानी···मैं बीमार था और तुम मसूरी में बैठी हुई पैसे की ताकत का उपभोग कर रही थी।

मदन बाबू जी, इस समय आपको विश्राम की आवश्यकता है···।

मानिकचंद यह कठोर और क्रूर सत्य नहीं सुनना चाहते मदन ··लेकिन मैं अपनी बात कहूंगा और वह बात तुम्हें सुननी पड़ेगी। हा, तो उस बीमारी की हालत में मैंने यह अनुभव किया कि दुनिया में ममता···भावना नाम की कोई चीज नहीं है···। मैं अकेला इस कमरे में उस पिशाच की भाति बद था, जिसके जीवन में हसी नहीं, रोना नहीं, एक भयानक सूनापन···

पत्नी . अब बस कीजिए···

मानिकचंद · बुरा न मानो रानी···मैं न तुम्हें दोष दे रहा हू, न मदन को। मैं केवल सत्य की व्याख्या कर रहा हू। तो वह सूनापन मेरे प्राणों को बुरी तरह अखर रहा था ···और उसी समय पैसे के देवता को मैंने याद किया। मैंने टेलीफोन उठाया···और मैं उस देवता की उपासना में लग गया।

पत्नी · उपासना का समय हुआ करता है।

मानिकचंद · तुम उपासना को समझती नहीं···। उपासना का न कोई समय होता है न अवधि होती है। असली उपासना वह है जहां सारा जीवन ही उस उपासना के रंग मे रग जाए। (अर्ध विराम) और उस उपासना में

सुख-दुख मुझे फिर से मिल गये। मैं प्रसन्न होता था मैं दुखी होता था। उस मौत के सूनेपन को मैं अपने पास से न हटा सका।

मदन : लेकिन यह घाटा हम कैसे बरदाश्त कर सकेंगे?

मानिकचंद : हां, यह घाटा (सोचता है) अभी तुमने कहा था कि मैं बीमार था...पागलपन की हालत में मैंने यह सौदे किये थे।

डॉक्टर की आवाज : क्षमा कीजियेगा सेठ मानिकचंद...आपकी तबीयत थोड़ी बहुत खराब अवश्य थी, लेकिन आपने पागलपन में यह सौदे नहीं किये।

मानिकचंद : कौन...डॉक्टर?

डॉक्टर : जी, हां!

(डॉक्टर के चलने की आवाज़)

मदन : आपकी राय तो अभी हम लोगों ने नहीं मांगी थी।

डॉक्टर : आपने नहीं मांगी थी, लेकिन दूसरे लोगों ने जरूर मांगी है। बाजार में यह बात फैल गई है कि सेठ मानिकचंद के घाटे की रकम देने से इन्कार किया जा रहा है।

पत्नी : सट्टे में घाटा नहीं होता, वहां जुए की हारजीत होती है।

मदन : और जुए की हारजीत कानूनन नहीं वसूल की जा सकती।

डॉक्टर : कानून! मदन बाबू...सेठ जी ने अपनी दो मिलों पर सत्तर लाख रुपये कर्ज लेकर घाटा पूरा कर दिया है।

मदन : बाबू जी, क्या यह सच है?

पत्नी : आप बोलते क्यों नहीं...

मानिकचंद : डॉक्टर...क्या यह दस्तावेज रेहननामा था, जिस पर सेठ कस्तूरचंद मेरे दस्तखत ले गये थे?

डॉक्टर : वह कागज आपने देख तो लिया था?

(दोनों जाते हैं)

मानिकचंद : देख रहे हो, किशोरी लाल।

किशोरी : देख रहा हूं मानिकचंद…और मुझे दुख है। आखिर तुम सेफ की चाभी इन्हें क्यों नहीं दे देते?

मानिकचंद : किशोरी लाल…तीन साल जेल में रह कर भी तुम यह न जान पाये कि सेफ की चाभी जिन्दगी की चाभी है उसे अपने पास से अलग करने के माने है विनाश। देख रहे हो मेरे गले की सोने की जंजीर में लगी हुई यह चाभी।…

किशोरी : देख रहा हू…सब कुछ देख रहा हू। अब मै चलूगा।

मानिकचद : नहीं, किशोरी लाल…तुम अपना रुपया वापस ले लो और अपने अभिशाप से मुझे मुक्त कर दो, तब जाओ…

किशोरी : मानिकचद…तुम अभिशाप को गलत समझ रहे हो… तुम्हारे ऊपर मेरा अभिशाप नहीं है। अभिशाप रुपये का है।

मानिकचंद : किशोरी लाल…मुझे क्षमा करो।

किशोरी : तुमने मेरा कोई अपराध नहीं किया मानिकचद, तुम मुझ से क्षमा बेकार माग रहे हो। कोई बहुत बड़ा पाप किया होगा मैंने कभी…उसका दण्ड मैंने भुगत लिया और आज मेरे मन में कोई ग्लानि नहीं, कोई सन्ताप नहीं। मेरे लड़के की डॉक्टरी अच्छी चलती है…मेरे पास कोई अभाव नहीं। मेरे जीवन में मेरी पत्नी को, मेरे पुत्र की, मेरे पौत्रों की ममता है…मेरा सुख-दुख है…यह क्या कम है? मैं भगवत भजन करता हू…जहा तक हो सकता है लोगों की सेवा करता हूं… मैं तुमसे कहीं अधिक सुखी हू।

मानिकचद : झूठ बोल रहे हो किशोरी लाल…तुम मुझे धोखा दे रहे हो…।

रुपये तुमने चुराये थे।

मानिकचंद : किशोरी लाल, तुम मुझ से रुपये वापस ले लो, लेकिन मुझे इस तरह न देखो।

किशोरी : मानिकचंद, जो कुछ मैंने सहन किया उसका कोई मुआवजा नहीं···। मैं तुमसे रुपये लेने नहीं आया हूं ···मैं सिर्फ तुम्हें एक बार देखने आया हूं···तुम्हारे वैभव को देखने आया हूं···लोग कहते हैं कि तुम करोड़पति हो···लोग कहते हैं तुम ऐश आराम की जिन्दगी व्यतीत कर रहे हो।

(मदन और मदन की मा का प्रवेश)

मदन : बाबू जी इनकम टैक्स वालों ने चालीस लाख रुपये का नोटिस भेजा है।

मानिकचंद : चालीस लाख।···

मदन : न जाने कैसे उन्हें हमारे हिसाब-किताब का पता लग गया···

पत्नी : अजीब मुसीबत आ पड़ी है···आप सेफ की चाबियां मदन को दे दीजिये।

मानिकचंद : सेफ की चाबियां मदन को दे दूं···और अपने हाथ कटा लू। यही सलाह करते रहे हो तुम मा-बेटे···जाओ यहां से, मैं सेफ की चाभी किसी को नहीं दूंगा···।

पत्नी : आखिर आपके मरने पर मदन ही तो मालिक होगा···

मानिकचंद : मेरे मरने के बाद···(हसता है) और मेरे मरने के लिए तुम दोनों माला फेरो। पूजा पाठ कराओ··· जाओ यहां से तुम दोनों।

डॉक्टर : आप लोग जाइये यहा से···जब शान्त हो जाये तो समझा-बुझा कर तय कर-लीजियेगा।

मदन : अच्छी बात है डॉक्टर···चलो मा···तुम कौन ?

किशोरी : मानिकचंद का बहुत पुराना दोस्त···सुना बीमार है, देखने चला आया।

मर चुका हूं। वह मुझसे कह गया है'''रुपया तुम्हें खा गया'''।

पत्नी : डॉक्टर'''इनकी तबीयत तो ठीक है'''।

मानिकचंद : बिलकुल ठीक है रानी ''केवल एक सत्य मुझ पर प्रकट हुआ है'''मेरी प्रेतात्मा को किशोरीलाल न जाने कहां से ले आया ''और वह इस प्रेतात्मा को मेरे सिरहाने छोड़ गया है'''सुन रही हो वह प्रेतात्मा क्या कह रही है'''वह कह रही है'''रुपया तुम्हें खा गया। '''रुपया तुम्हें खा गया। ''रुपया तुम्हें खा गया। '''रुपया तुम्हें खा गया।

□

किशोरी : मानिकचंद ! ···धोखा मैं तुम्हें नही दे रहा···धोखा तुम अपने को दे रहे हो, तुम्हारी सुख शान्ति अर्थ के पिशाच ने तुमसे छीन ली, तुम्हारा संतोष उसने नष्ट कर दिया । मानिकचंद उस दिन जब तुम दस हजार चुरा कर आये थे,···तुमने समझा था कि तुम पैसा खा गये लेकिन तुमने गलती की थी···।

मानिकचंद : गलती ?

किशोरी : हां, तुमने गलती की थी मानिकचंद ! ···मैं कहता हूं··· तुमने रुपया नहीं खाया था, रुपया तुम्हें खा गया था।

मानिकचंद : क्या कहा ···रुपया मुझे खा गया था ?

किशोरी : हां, रुपया तुम्हे खा गया। तुम अपने जीवन को देखो तुम में ममता नही, दया नहीं, प्रेम नहीं, भावना नहीं। तुम्हारे अन्दर वाला मानव मर चुका है । आज तुम्हारे अन्दर अर्थ का पिशाच घुस गया है मानिकचंद···अब मैं जाता हूं।

मानिकचंद : किशोरी लाल···किशोरी लाल···गया···डॉक्टर सुना कितनी कठोर बात कह गया ···

डॉक्टर : शायद वह बहुत बड़ा सत्य कह गये···अब आप चुप-चाप लेट जाइए।

नर्स : डॉक्टर ···छोटे सेठ ने कहा है कि उन्हें आफिस जाने में देर हो रही है । आप उनसे मिल लीजिए।

पत्नी : हां, डॉक्टर साहब···मैं इनके पास हूं···आप मदन से मिल लीजिये···मैं इनकी देखभाल करती हूं।

मानिकचद : सेफ की चाभी लेने आयी हो (हंसता है)हां···हां··· हां···नही मिलेगी सेफ की चाभी, जब तक मैं जिन्दा हूं, चाभी नहीं मिलेगी, जानती हो···इस दुनिया में मेरा कोई नहीं है···बीवी, बच्चे, नातेदार, पड़ोसी, नौकर-चाकर ये सब-के-सब मेरे नहीं हैं, मेरे रुपये के हैं···अभी किशोरीलाल मुझसे बतला गया है कि मैं

ऐसा ही अंधेरा ? लेकिन···लेकिन दर्द बढ़ता आ रहा है। उफ् ! अब सहा नहीं जाता ? डॉक्टर अभी तक नहीं आया ··तुमसे आज इसी समय आने को कहा था न ?

अनूप : हां, सरकार···लेकिन जब मैं डॉक्टर साहब के यहां गया था तब न बादल था न तूफान था। भगवान जाने इस बादल बरखा में आवेंगे भी या नहीं।

(मोटर का हार्न सुनाई पड़ता है।)

विश्व : यह आवाज कैसी···देखो अनूप, शायद डॉक्टर आ गया है।

(अनूप के जाने का स्वर) (थोड़ा विराम)

अनूप : चले आइये, डॉक्टर साहब।

डॉक्टर : कितना अंधेरा है इस कमरे में···दम घुट रहा है। मरीज कहां है ?

विश्व : यहां हूं डॉक्टर साहब···अनूप, लालटेन की बत्ती बढ़ा दो, बैठ जाइये डॉक्टर साहब।

डॉक्टर . आपने यह कमरा इतना अंधेरा क्यों कर रखा है···? सब की सब खिड़कियां बन्द और उन पर काले-काले मोटे परदे ? न हवा, न प्रकाश।

विश्व : इस हवा और प्रकाश से दूर रहने के लिए ही मैंने यह सब किया है डॉक्टर साहब···उफ्, कितना दर्द है ?

डॉक्टर : कहां दर्द है ?

विश्व : कहां दर्द है ? यही सवाल मेरे सामने भी है। बहुत जानने की कोशिश की कि कहां दर्द है लेकिन आज तक न जान सका। जब तक सह सका चुपचाप इस दर्द को सहता रहा···लेकिन अब नहीं सहा जाता डॉक्टर··· इसीलिए आपको बुलाया।

डॉक्टर : हूं ! तो आपको नहीं मालूम कि आप को दर्द कहां है। कब से बीमार हैं आप ?

अंतिम झंकार

[करुण संगीत कुछ धीमा सा रुकता हुआ । उस पर तूफान की हवा के झोंकों की साय-साय और वर्षा की बूंदों की आवाज । विश्व का स्वर कुछ थका सा और धीमा-सा सुनाई पड़ता है ।]

विश्व : डॉक्टर अभी तक नहीं आया···इतनी देर हो गई । उफ ! बेचैनी बढ़ती ही जाती है । अनूप, अनूप !

अनूप : हां, सरकार !

विश्व : कितना अंधेरा है यह कमरा ? न हवा, न प्रकाश ? (क्षीण हंसी हंसता है) शायद इन दोनों का मेरे जीवन में कोई स्थान नहीं रह गया ।

अनूप : आपने मुझे बुलाया था सरकार ?

विश्व : तुम्हें बुलाया था मैंने ? हां, याद आ गया, यह आवाज कैसी आ रही है ?

अनूप : सरकार, बड़े जोर की वर्षा हो रही है, साथ में तूफान भी है, ऐसा लगता है कि प्रलय आ गया है !

विश्व : प्रलय आ गया···सच अनूप, प्रलय आ गया, मैं भी तो देखूं इस प्रलय का रूप । परदे हटा दो, खिड़कियां खोल दो ।

अनूप : क्या कहा सरकार···परदे हटा दूं···खिड़कियां खोल दूं ।

विश्व : नहीं, अनूप, रहने दो यह कमरा ऐसा ही, ऐसा ही,

असंभव । आप मुझे इस प्रलय से निकाल सकेंगे ?

डॉक्टर : कोशिश करूंगा···

विश्व : इसीलिए आप को बुलाया है डॉक्टर···मेरी पीड़ा अब उस चरम सीमा तक पहुंच गई है···जिसके बाद बेहोशी का अभेद्य अंधकार फैला हुआ है। अरे सुनते हैं डॉक्टर साहेब ··देखिये वह सितार बज रहा है··· वह आ गई···वह आ गई ?

डॉक्टर : कौन ? आप क्या कह रहे हैं ? वहां न सितार बज रहा है···न वहां कोई है ।

विश्व : आपको वह संगीत नहीं सुनाई पड़ता ?··· नहीं, आपको वह संगीत सुनाई भी न पड़ेगा ? वह सितार मेरे लिए बज रहा है। केवल मेरे लिए ! ठीक उसी तरह जैसे वह नृत्य कर रही है केवल मेरे लिए !

डॉक्टर : मैं आप को दवा देता हूं···आप सो जाइये, आप का दिमाग बहुत थक गया है ।

विश्व : नहीं डॉक्टर, अब मुझे आप की दवा की कोई आवश्यकता नहीं । अपनी पीड़ा की सीमा को मैं पार कर चुका हूं । लेकिन बेहोशी के अभेद्य अन्धकार के स्थान पर उन्मनता की रंगीनी मेरे सामने है । वे बन्धन जो मुझे अविश्वास और हिंसा की दुनिया से बांधे हुये थे···उन्हें तोड़ने वह आ गयी । उसने मुझे वचन दिया था न ?

डॉक्टर : कौन है वह ?

विश्व : राधा ? कृष्ण की राधा नहीं, विश्व की राधा ? प्रेम की राधा नहीं, कला की राधा ? मरते समय उसने मुझे वचन दिया था कि इस कठोर और कुरूप दुनिया में मुझे पांच वर्ष और रहना पड़ेगा । इसके बाद वह स्वयं आकर मुझे यहां से ले जायेगी ।

डॉक्टर : आपके साथ शायद कोई बहुत बड़ा रहस्य है ?

विश्व : कब से बीमार हूं···सोचना होगा ? नहीं, डॉक्टर, मेरी स्मृति काम नहीं देती, लेकिन···ऐसा लगता है कि युगों-युगों से बीमार हूं।

डॉक्टर : आपको यह भी नहीं मालूम कि आप कब से बीमार हैं ?

विश्व : नहीं डॉक्टर, मैं आपसे झूठ नहीं बोलता। मुझे समय का कोई अन्दाजा नहीं रह गया। मिनट···घंटे··· दिन···वर्ष···मुझे इनका कोई अन्दाज नहीं रह गया है···उफ्···बड़ा दर्द है, अब नहीं सहा जाता।

डॉक्टर : आपको नींद आती है ?

विश्व : नींद ? मैं तो भूल ही गया हूं कि नींद किसे कहते हैं। जरा सोने दीजिये। नींद···शायद मैं नींद में तो हूं। याद आ गया···डॉक्टर याद आ गया, मैं जाग नहीं रहा हूं। मैं तो नींद में ही हूं, इस अंधेरे कमरे में न जाने कब का सोया पड़ा हूं···भूल गया हूं कि जागृति किसे कहते हैं···उफ् असह्य पीड़ा है डॉक्टर ··आप मेरी पीड़ा दूर कर सकेंगे डॉक्टर ? बोलिये···आप मौन क्यों हैं ?

डॉक्टर : आप को कोई खास मर्ज मालूम होता है···और आप यह भी नहीं बतला सकते कि पीड़ा आप को कहां है ?

विश्व : इसीलिए तो आप को बुलाना पड़ा है। थोड़ा मौन··· और फिर सितार के झंकार की आवाज। यह आवाज कैसी ? डॉक्टर सुन रहे हैं कुछ आप ? यह आवाज कैसी ?

डॉक्टर : आंधी चल रही है···पानी बरस रहा है···बादल गरज रहे हैं ··बाहर प्रलय है।

विश्व : प्रलय ? (हंसता है) उस बाहर वाले प्रलय के बीच से निकल कर आप आ गए डॉक्टर···लेकिन इस अन्दर वाले प्रलय से निकल आना···असंभव है···

प्रिय विश्व,

तुम्हारी ख्याति मेरे पास पहुच चुकी है, कला की इस साधना पर मेरी तुम्हें बधाई। कितनी इच्छा होती है कि एक बार तुमसे मैं मिल सकू। ···और इधर कुछ दिनों से यह इच्छा और प्रबल हो गयी है। तुम्हे जानकर आश्चर्य होगा कि मेरे जीवन में तुम्हारी ही कोटि की एक कलाकार ने प्रवेश किया है···उसका नाम है राधा।

तुम आश्चर्य करोगे कि यह राधा कौन है। मैं स्वय नहीं जानता कि वह कौन है। एक दिन एक नृत्य मण्डली मेरी रियासत में आयी···उसमे यह राधा थी। इसका नृत्य देखकर मैं मुग्ध हो गया था, लेकिन इससे भी अधिक प्रभावित किया मुझे उसके सौन्दर्य ने। उसके रूप को मैं निरखता रह गया और मुझे ऐसा लगा मानो मैं उसके बिना नहीं रह सकता। अपने जीवन की समस्त मधुरिमा और प्रेरणा मैंने राधा मे देखी···और अन्त मे मैंने उससे विवाह कर लिया।

मैं जानता हू कि यह विवाह करके मैंने रानी प्रभावती के साथ अन्याय किया है, लेकिन क्या करू, मैं विवश हू।

इस पत्र को पाते ही तुम यहा चले आओ··· विश्व मेरा अनुरोध है। मैं चाहता हू तुम भी राधा को देखो·· कितनी महान कलाकार है यह···मैं तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा हू, मुझे निराश मत करना।

तुम्हारा
विधुशेखर

(विश्व की आवाज)

विश्व : और उसी रात विश्व राजा विधुशेखर से मिलने चल

विश्व : रहस्य···उसे आप रहस्य कह भी सकते हैं···नही भी कह सकते है। जानना चाहेंगे आप मेरे रहस्य को ? मुझे ले जाने की जल्दी अभी उसे नही है। आज से दो साल पहले की बात है डॉक्टर···उन दिनो एक स्वस्थ और सुन्दर नवयुवक ने, अपनी आखों मे सुन्दर स्वप्नों को और अपने मन मे नवीन उमगो को लिए हुए जीवन में प्रवेश किया। उस युवक का नाम था विश्व···।

डॉक्टर : विश्व···नाम तो मुझे कुछ पहचाना सा लगता है। हा, मुझे याद आ गया, लोग उसे गंधर्व कहते थे, उसने सगीत को नवीन धारा दी थी···उसके सगीत मे प्राण था, भावना थी, आप उसी विश्व की बात कह रहे है ?

विश्व : हा, डॉक्टर उसी विश्व की बात कह रहा हू मं, वह नवयुवक था···उमंग और उत्साह से भरा हुआ। एक सगीत सम्मेलन मे उसने भाग लिया था···और लोग उसके संगीत को सुनकर मुग्ध हो गये थे।
(पार्श्व सगीत उठता है···और उस पार्श्व संगीत पर विश्व का गाना होता है)

दृश्य परिवर्तन

(विश्व का गान)

हर्ष ध्वनि···तालिया···

(विश्व की आवाज)

विश्व : और उस युवक को पता नही था कि नियति का ताना-बाना कुछ अजीब तरह से बुना जा रहा है। उस संगीत सम्मेलन से जब वह घर वापस लौटा···उसे एक पत्र मिला। वह पत्र उसके बाल्यकाल के एक अभिन्न मित्र का था जो लिबनगर का राजा हो गया था।

आसू कैसे ?

राधा : बधाई है विश्व बाबू···मैं तो अपने को भूल ही गयी थी। इस तन्मयता को अपने वश में कर लेना कला का चरम विकास है।

विश्व : धन्यवाद रानी साहिबा···आप स्वयं बहुत बड़ी कलाकार हैं ऐसा शेखर का कहना है···क्यों शेखर ?

शेखर : राधा···मैंने विश्व को बुलाया है तुम्हारी कला को देखने के लिये। आज तुम अपना नृत्य दिखलाओ विश्व को ?

राधा : मुझे दुख है विश्व बाबू···मैंने नृत्य करना छोड़ दिया है।

शेखर : नृत्य करना कहा छोडा है।

राधा : आप बातें बड़ी जल्दी भूल जाते है···विश्व बाबू मुझे क्षमा कीजियेगा···मेरी तबीयत खराब है···अब मैं थोड़ा सा आराम करूगी।

शेखर : बुरा न मानना विश्व राधा पर···अजीब तरह की ही और भावुक स्त्री है यह ?

विश्व : और उस रात जब विश्व सो रहा था···एकाएक उसकी नींद टूट गयी। बसंत ऋतु की वह सुहानी रात त्रयोदशी का चन्द्रमा अपनी समस्त सुषमा मानो पृथ्वी पर उड़ेले दे रहा था। एक मधुर संगीत उसके कानों में पड़ा। और उस संगीत के साथ घुघरुओं की आवाज, विश्व बरामदे में सो रहा था···सामने फूलों से लदा उपवन। यह संगीत की आवाज उसी उद्यान से आ रही थी···विश्व उस संगीत के स्वर के सहारे बढ़ा। राजमहल का वह उद्यान कितना बड़ा था। अन्त में वह एक ऐसे स्थान पर पहुंचा, जो सबसे अधिक सुन्दर था, रमणीय था। एक झाड़ी के पीछे पहुच कर उसने देखा कि चादनी के प्रकाश में उद्यान

दिया। स्टेशन पर विधुशेखर ने विश्व का स्वागत किया।

विधुशेखर : स्वागत है विश्व···मुझे मालूम था कि तुम अवश्य आओगे। कितने दिनों बाद मिले हैं हम लोग।

विश्व : हा, शेखर···बहुत दिनों बाद मिले है···कितने प्रसन्न दिख रहे हो तुम।

शेखर : इतने सौभाग्य पर भी न प्रसन्न दिखू···चलो, राधा तुम्हारी प्रतीक्षा कर रही होगी।

(कार की आवाज...डिजाल्व···कार का स्वप्न)

शेखर आओ विश्व·· देख रहे हो इन्हें···यह है मेरी राधा रानी···मुझ पर कृपा की राधा··· (हसता है) और ये है मेरे बाल्य सखा विश्व ? मैंने तुम्हारे संगीत की इतनी प्रशसा की है, इतनी प्रशसा की है कि राधा बिना तुम्हें देखे हुए ही तुम पर मुग्ध है।

विश्व : नमस्कार रानी साहिबा ?

शेखर : राधा···तुमने विश्व के नमस्कार का उत्तर नही दिया।

राधा : इन्होने तो नमस्कार रानी साहिबा को किया है···अरे मैं भूल गयी थी कि मैं रानी हो गयी हू···नमस्ते विश्व जी ? (हसती है)।

शेखर · तुम्हारा संगीत सुनने को कितनी उत्सुक है यह राधा ·· तुम नही जानते विश्व ? कुछ गाओ न ?

राधा : अभी सफर से चले आ रहे हैं···थके होगे ?

विश्व : मधु ऋतु के सुरमित समीरण के सामने आते ही जिस प्रकार मनुष्य की थकावट जाती रहती है उसी प्रकार आपके सामने आते ही मेरी थकावट दूर हो गयी है।

(विश्व गाता है)

....

....

शेखर : सुना राधा···अरे···यह क्या ? तुम्हारी आंखों में

उपवन···जहां स्थान-स्थान पर सुन्दर सरोवर है, जिनमे कमल खिले हुये हैं। वहीं एक छोटी-सी कुटीर बनवा ली है मैंने। राधा के साथ प्राय. मैं वहां चला जाया करता हू रहने के लिए। वहीं हम लोग रुकेंगे ···दोपहर को वही भोजन होगा···सब प्रबन्ध करवा लिया है मैंने।

विश्व जैसा ठीक समझो···लेकिन मैं शिकार नही खेलता।

शेखर . न सही···तुम उसी कुटी मे रहना। मैं जरा राधा से भी कह दु जाकर।

(विराम)

राधा . सुन रही हू कि आप लोग शिकार पर जा रहे हैं।

शेखर . हां, राधा···यही कहने आया हू। तुम जल्दी से तैयार हो जाओ।

राधा · मेरी तबीयत ठीक नही है ··मैं न जा सकूगी।

शेखर : क्या हुआ तुम्हें···डॉक्टर को बुलाऊ।

राधा डॉक्टर को बुलाने की कोई आवश्यकता नही। तबीयत इतनी खराब नही है। सिर्फ शिकार पर जाने का मन नही है।

शेखर . यह तो बुरा हुआ क्योंकि मैंने दिन-भर का प्रोग्राम बना लिया है। विश्व भी चल रहा है···दोपहर को उसका संगीत होगा।

राधा · मुझे विश्व का संगीत नही सुनना है।···नहीं सुनना है नही, मैं नहीं जाऊंगी···मेरी तबीयत ठीक नहीं है।

(विराम···उस पर विश्व का स्वर)

विश्व : और घण्टे-भर बाद वे लोग शिकार के लिये रवाना हो गये। राधा साथ में नहीं गई। कुटी में विश्व रह गया···अन्य लोग शिकार के लिए निकल गये। थोड़ी देर तक विश्व आस-पास की शोभा को निरखता रहा ···और फिर वह प्रकृति का निरीक्षण करने के लिये

की उस हरित भूमि पर मानो कोई स्वर्ग की अप्सरा नृत्य कर रही हो। कितनी देर तक वह उस अप्सरा का नृत्य देखता रहा।

विश्व : सुन्दर···अति सुन्दर ?

राधा : कौन ? कौन ? कौन हो तुम ?

विश्व मुझे क्षमा करना···मैं जानता हूं कि मुझे यहां नहीं आना चाहिए था, लेकिन मैं अपने को नहीं रोक सका? शेखर ने ठीक ही कहा था ··आप कला की साकार प्रतिमा है।

राधा : तुमने यहां आकर बुरा किया। जिस दिन मैंने शेखर से विवाह किया था उसी दिन मैंने प्रतिज्ञा कर ली थी कि शेखर को छोड कर मैं किसी भी दूसरे व्यक्ति के सामने नृत्य नहीं करूंगी ? तुम यहां क्यों आये··· जाओ यहां से ··जाओ।

विश्व राधा अपना मुंह छिपाये हुये, एक अपराधिनी की भांति वहां से चली गयी। विश्व लौट आया वह अपने बिस्तर पर लेट गया पर उसे फिर रात में नींद न आई। उसने सजीव कला को देखा था···वह रात-भर सोचता रहा, सोचता रहा। सुबह हुई और शेखर उसके पास आया, प्रसन्न और प्रफुल्लित।

शेखर जल्दी तैयार हो जाओ विश्व···आज तुम्हारे आने के उपलक्ष्य में मैंने शिकार की योजना बनाई है···मेरे दो-चार मित्र और आ गये है···एक घण्टे में हम लोग चल देंगे।

विश्व : लेकिन शेखर···मुझे तो शिकार से कोई प्रेम नहीं है। तुम जानते हो कि मुझे बन्दूक पकडना भी नहीं आता।

शेखर : कोई बात नहीं···तुम शिकार मत खेलना। हम लोग जहां चल रहे है वह मेरे राज्य का सबसे रमणीय स्थान है। पर्वत मालाओं से घिरा हुआ एक सुन्दर

विश्व : कला की तन्मयता जीवन का एकमात्र सुख है।

राधा यह बात मुझे आज ही मालूम हुई जब मैंने तुम्हारे संगीत की स्वर लहरियों पर मुग्ध इन पशु-पक्षियों को देखा···और फिर मुझे अपने ही ऊपर खेद हुआ। सुनते हो गोलियों की वे आवाजें। दूर पर मृत्यु नर्तन कर रही है ··और यहा मैंने देखा जीवन अपने मे विभोर अठखेलिया कर रहा था।

विश्व चलिये रानी साहिबा···दोपहर हो रही है, लोगों के लौटने का समय हो रहा है।

राधा : तुमसे प्रार्थना है तुम मुझे रानी साहिबा मत कहो। यह राज पाट···वैभव···मैं क्यों इनमे जकड गई हू। तुमने यहा आकर मेरे प्राणों की अतृप्तियो को जागृत कर दिया है विश्व। जीवन मुक्त है, निर्बन्ध है लेकिन मैं बन्धनों मे बध गई हू।

विश्व यह सब आप क्या कह रही है?

राधा . मैं सच कह रही हूं विश्व। इस रानी बनने का बहुत बड़ा मूल्य चुकाना पडा है मुझे। मुझे यह मान, मर्यादा, धन, वैभव नहीं चाहिए···नहीं चाहिए।

विश्व आपकी तबीयत ठीक नही है रानी साहिबा।

राधा हाथ जोडती हू इस तरह व्यग्य मत करो। कौन-सा सुख मिलता है तुम्हें मुझे रानी साहिबा कह के सम्बोधित करने मे। मुझे राधा कहो···केवल राधा।

(थोडी देर तक मौन, फिर राधा का स्वर)

राधा : चलो, विश्व कुटी मे, अब मैं शिकार खेलने आगे न जाऊगी। तुमने यहा आकर मेरे मन मे एक भयानक उथल-पुथल उत्पन्न कर दी है। तुम यहा क्यों आये।

विश्व . पता नही, शायद नियति मुझे यहा ले आयी है। मुझे यह पता नहीं था कि मुझे यहा कला की अतृप्ति के दर्शन होंगे, मैं तो ईश्वर के निमन्त्रण पर आया था।

चल दिया। उसका सितार उसके हाथ मे था। कुछ दूर जाकर उसने लताओं से घिरे हुये एक सरोवर को देखा। मलय पवन, सुगन्ध भार से दबा हुआ उस सरोवर की लहरियों के साथ अठखेलियां कर रहा था। कमल की पंक्तियां मादक-सी झूम रही थी। विश्व वहीं एक बैठ गया···और वह अपने को न रोक सका। उसकी उगलियों के स्पर्शमात्र से ही सितार के तार झनझना उठे···और उनसे स्वर्गीय संगीत प्रभावित हो चला। विसुध और तन्मय-सा वह सितार बजाने लगा। पशु-पक्षी उसे घेर कर उस स्वर्गीय सगीत का रसास्वादन करने लगे।

(सितार की एक गति बजती है)

विश्व उसी समय मानो विश्व अपनी निद्रा से चौक उठा। किसी ने बड़े मधुर स्वर मे कहा।

राधा : सुन्दर·· अति सुन्दर।

विश्व : आप···आपकी तो तबीयत ठीक नहीं थी रानी सात्विा।

राधा : तबीयत ठीक हो गई थी···फिर शिकार का मुझे बेहद शौक है।

विश्व : वह तो मैं आप के शिकारी कपड़ों से और आपके हाथ की बन्दूक देख कर ही कह सकता हूं।

राधा : जब मैं कुटी में पहुंची, नौकरों ने बतलाया कि सब लोग शिकार पर निकल गये हैं। मैं भी एक ओर चल पड़ी और मैंने देखा कि झुण्ड के झुण्ड हिरन एक ओर खिचे चले आ रहे हैं। कुछ विचित्र-सा लगा। जब कभी शिकार होता है तो ये हिरण यहा से दूर भाग जाते हैं···जैसे इन्हें पूर्वाभास हो जाता है कि मृत्यु इनके पास आ रही है। लेकिन यहा मैंने देखा कि ये पशु पक्षी दूर भागने के बजाय दूर-दूर से खिचे हुये इधर चले आ रहे हैं।

करती है। अन्तर्द्वन्द्व से बाहर निकलो।

राधा . मेरी एक प्रार्थना है विश्व···मानोगे ?

विश्व बोलो राधा ? मैं वचन देता हू।

राधा · तुम कल ही यहा से चले जाओ, तुम नही जानते तुम मेरे जीवन मे एक धूमकेतु की भाति आ गए हो, तुम नही जानते कि तुमने मुझे साधना भ्रष्ट कर दिया है। तुम एक अभिशापित और कठोर सत्य की भांति मेरी चेतना मे आ पड़े हो, और वह सत्य यह है कि मैं शेखर की नही हू···किसी भी हालत मे नहीं हू। पर मैं अपने शरीर को शेखर को अर्पित कर चुकी हू। विश्व, तुमने मेरी आत्मा मे एक भयानक विद्रोह जागृत कर दिया है।

विश्व : मुझे इसका दु ख है राधा।

राधा मैं तुम्हें भूल जाना···चाहती हू कलाकार विश्व··· और तुम्हे भूलकर मैं अपने अन्दर वाले कलाकार को भी भूल जाना चाहती हू। मैं हाथ जोड़ती हूं तुम कल ही यहा से चले जाओ बोलो, वचन देते हो।

विश्व : मैं वचन देता हू राधा।

राधा : और फिर भविष्य मे तुम मुझ से न मिलोगे···वचन दो।

विश्व : मैं वचन देता हू।

राधा : तुम बड़े अच्छे हो विश्व···और मे अब प्रयत्न कर सकूंगी कि फिर से मे शेखर की हो सकूं···चलो, लोग वापस लौट रहे हैं और विश्व···तुम भी मुझे भूल जाना···हमेशा के लिए।

विश्व : मगर भूल सका तो।

राधा : तुम बड़े अच्छे हो विश्व।

विश्व : डॉक्टर···दूसरे ही दिन विश्व वहा से चल दिया। शेखर के लाख अनुरोध करने पर भी वह वहा न रुका।

वड़ा भला आदमी है शेखर, वड़ा सहृदय और सरस।

राधा : उसी सरसता और सहृदयता ने तो मुझे विवश कर दिया…इसी सरसता और सहृदयता के धोखे में आकर मैं अपने को भूल गयी…।

विश्व : मैं समझा नहीं।

राधा : मैं भी समझती थी कि मैं शेखर से प्रेम करती हूं और इसीलिए मैंने उनसे विवाह कर लिया और इसके बाद मैंने अपनी कला को छोड़ दिया। या तो मैं शेखर की होकर रह सकती हूं। या कला की होकर रह सकती हूं। मैंने प्रण कर लिया था कि मैं शेखर की होकर रहूंगी, और इसीलिए मैंने कल तुम्हारे सामने नृत्य करने से इनकार कर दिया था।

विश्व : मैं समझा नहीं।

राधा : मैं कैसे समझाऊं विश्व ? शेखर की मान-मर्यादा मुझ मे है। रानी को यह शोभा नहीं देता कि वह अपनी कला से दूसरों को प्रसन्न करे। मैं शेखर की हूं… केवल शेखर की…और मेरी कला भी शेखर को ही अर्पित है।

विश्व : तो फिर इसमें अब शंका कैसी ?

राधा : कल तुम्हें देखकर मुझे ऐसा लगा कि मैंने गलती की। कलाकार सफल तब हो सकता है जब वह कला को आत्मसमर्पण कर दे, जब वह कला का हो जाए। शेखर को आत्मसमर्पण करके मैंने कला को छोड दिया। बोलो मैं गलत तो नहीं कहती ?

विश्व : नहीं राधा…तुम ठीक कहती हो, लेकिन…लेकिन भूल जाओ अपने इस आन्तरिक संघर्ष को। जो हो गया, वह हो गया, अपने जीवन क्रम को सुख… सन्तोष में चलने दो, कला पागलपन है, वह हमें धर्म और कर्तव्य से विमुख करने को कभी-कभी प्रेरित

विश्व : नहीं डॉक्टर···आप उस प्रेम की कल्पना नहीं कर सकते जहां वासना न हो। वासना की तड़पन अस्थायी होती है। उसकी पूर्ति हो सकती है, पर प्रेम स्थायी होता है, उसकी पूर्ति असम्भव है। विश्व के हृदय में प्रेम ने जन्म लिया था, जिस की पूर्ति असम्भव थी और धीरे-धीरे विश्व ने अनुभव किया कि उसमें साधना का अभाव है। दुनिया की चहल-पहल से उसे विरक्ति हो गयी थी···शान्त और एकान्त जीवन के लिए वह आतुर हो उठा। और एक दिन उसने गेरुये वस्त्र पहन लिए वह नगर को छोड़कर हिमालय चला गया। साधना में लीन होने।

डॉक्टर : मैंने असफल प्रेमियों के संन्यास ले लेने की बातें सुनी हैं।

विश्व : प्रेम में सफलता अथवा असफलता का प्रश्न ही नहीं उठता। डॉक्टर, वहां अगर कुछ है तो उसकी पूर्ति अथवा उसका अभाव। जहां अभाव है वहीं मृत्यु है, और विराग उसी मृत्यु का दूसरा नाम है। हां, तो मैं कह रहा था कि विश्व ने सन्यास ले लिया··· पहाड़ों में वह घूमा करता। एक मात्र संगीत उसका साथी था। उसे न खाने की फिक्र थी न पहनने की। जो मिलता, खा लेता, जहां स्थान मिलता वहां सो जाता। मन्दिरों के खण्डहरों में, पहाड़ों की गुफाओं में उसने न जाने कितनी रातें बिताईं।

डॉक्टर : बड़ी-बड़ी तपस्या की विश्व ने।

विश्व लेकिन उससे भी अधिक बड़ी तपस्या की राधा ने। विश्व के पास केवल अभाव था···राधा के पास अभाव के साथ-साथ उस अभाव का ध्यान भी था। विश्व को देखकर राधा का कला के प्रति प्रेम जग पड़ा था, लेकिन यह कला के प्रति प्रेम न था···वह प्रेम था

और जब वह वहां से चलने लगा, राधा उसे विदा देने आयी, असीम करुणा थी राधा की आंखों में, जिसे केवल विश्व ने देखा। मानो वे आंखें अपना समस्त प्रकाश, अपना समस्त उल्लास विश्व के वियोग पर न्योछावर कर चुकी हों।

वह अपने नगर आ गया, कुछ दिनों तक नगर की चहल-पहल में, राग-रंग में उसने अपने को खो देने का प्रयत्न किया'''पर शायद यह सब उसकी प्रकृति के प्रतिकूल था। और-और डॉक्टर'''विश्व तो अपने को राधा के यहां खो आया था। जब'''जब वह राग-रंग और आमोद-प्रमोद में अपने को भूलने का प्रयत्न करता तब राधा की मूर्ति उसकी आंखों के आगे आ जाती'''उसकी भरी हुई आंखें उसका मुर्झाया हुआ मुख। एक गहरी उदासी उसके प्राणों में भर गई थी। उसकी आंखों की चमक जाती रही थी, उसके हृदय की उमंग कुम्हला गई थी।

धीरे-धीरे उसने अपने को राग-रंग और आमोद-प्रमोद से अलग खींच लिया, दिन-भर चुप बैठा, वह कुछ सोचता रहता और जब यह अखर जाता तब वह खोया-सा लक्ष्यहीन घूमने निकल जाता। अपने मित्रों से मिलना-जुलना उसने बन्द कर दिया'''वह जीवन से बहुत दूर जा पड़ा था।

उसने अनुभव किया कि वह राधा से प्रेम करने लगा है'''उस राधा से जो उसके अभिन्न मित्र शेखर की पत्नी थी। राधा ने उसे अपने जीवन से बाहर कर दिया था, पर वह राधा को अपने जीवन से बाहर नहीं कर सका। उसके मर्म की व्यथा को तुम नहीं समझ सकोगे डॉक्टर।

डॉक्टर : मैं कुछ-कुछ अनुमान कर सकता हूं।

उसी समय रात घिर आयी। संगीत का स्वर दूर हटता, हटता लोप हो गया और राधा रास्ता भूल गयी। वह बेतरह थक गयी थी'''और उसमें अब चलने की शक्ति न रह गयी थी। हार कर वह एक चट्टान पर बैठ गयी।

सघन अन्धकार और निर्जन प्रदेश, सर्द हवा चल रही थी डॉक्टर ''और राधा कांप रही थी। उसके सामने मानो साकार मृत्यु खड़ी थी। लेकिन डॉक्टर उसमें अनायास ही जीवन के प्रति मोह पैदा हो गया था, विश्व के संगीत ने मानो उसके प्राणों के धुंधलेपन को दूर कर दिया था।

डॉक्टर : बेचारी राधा! फिर क्या हुआ?

विश्व : वही कह रहा हूं। जब अन्धकार बहुत बढ़ गया और राधा घर वापस नहीं आयी, तब शेखर को चिन्ता हुई। नौकरों को लेकर वह राधा को ढूंढने निकल पड़ा। ऊंची-नीची पहाड़ियों पर चढ़ता हुआ शेखर का दल एक मन्दिर के खण्डहर में पहुंचा। और वहां शेखर विश्व को देख कर चौंक उठा। क्या हालत हो गयी थी विश्व की। घबराये स्वर में शेखर ने विश्व से सारी बात कही'''और विश्व भी उसी प्रकार पागल-सा शेखर के साथ राधा को ढूंढने निकल पड़ा। आस-पास का सारा प्रदेश विश्व का घूमा पड़ा था। थोड़ी देर बाद विश्व उस स्थान पर पहुंच गया जहां राधा ठण्ड से ठिठुरी हुई मृत्यु की प्रतीक्षा कर रही थी। वह प्रायः बेहोश सी हो गयी थी।

रात भर के उपचार के बाद सुबह राधा स्वस्थ हो गयी थी। विश्व और शेखर उसके सिरहाने बैठे थे और विश्व को पाकर राधा में मानो नवीन प्राण-शक्ति आ गयी।

कलाकार विश्व के प्रति ? और प्रेम की इस जागृति ने उसकी स्थिति असह्य बना दी। वह विवाहिता थी। जिस पुरुष से उसका विवाह हुआ था वह नेक था, सज्जन था। वह राधा का आदर करता था, उसके सुख-दुख का ख्याल रखता था, उसकी हर एक इच्छा को वह पूरा करता था। लेकिन इतना सब होते हुये भी राधा ने अनुभव किया कि वह उससे प्रेम नहीं करती।

डॉक्टर : मैं मानता हू कि उसकी असह्य परिस्थिति थी।

विश्व : वह लगातार प्रयत्न करती थी कि वह शेखर से प्रेम करे···वह विश्व को भूलना चाहती थी, लेकिन वह विवश थी। उसके सामने शेखर की और अपनी मर्यादा का प्रश्न था, उसके मन में धर्म का और कर्तव्य का ज्ञान था। कितने शत्रु थे उसके···और इन सब शत्रुओं से उसे अकेली ही लड़ना था। बड़ा भयानक अन्तर्द्वन्द्व था उसमे।

डॉक्टर : ऐसे अन्तर्द्वन्द्व में मनुष्य का स्वास्थ्य जवाब दे देता है।

विश्व : ठीक यही हुआ उसके साथ···उसके स्वास्थ्य ने जवाब दे दिया। अच्छे डॉक्टरो, हकीम वैद्यों का इलाज हुआ, लेकिन कोई उसका मर्ज नहीं पकड पाया, कोई उसका मर्ज पकड़ भी तो न सकता था। राधा का जीवन उसके लिये असह्य हो गया था। वह मरना चाहती थी। अन्त में डॉक्टरो की सलाह से शेखर उसे वायु परिवर्तन के लिये पहाड पर ले गया।

(दृश्य परिवर्तन) (विराम)

शेखर : कितना स्वस्थ स्थान है यह मेरी राधा···यहां आकर तुम अच्छी हो जाओ।

राधा : अच्छा होने का प्रयत्न तो कर रही हू···अपने लिए नही पर तुम्हारे लिए।

राधा की बात में जो मृत्यु से लड़ रही है। क्या तुम उसे सहारा नहीं दे सकते? बोलो चुप क्यों हो?

विश्व . अगर राधा जी चाहती हैं कि मैं उनकी कुछ सेवा करूं तो इसे मैं अपना सौभाग्य ही समझूगा। क्यों राधा जी···क्या आप, आप चाहती है कि मैं यहा आ जाऊं।

राधा मैं क्या चाहती हू और क्या नही चाहती हू···इसका कोई सवाल ही नही उठता विश्व जी···आखिर मनुष्य का चाहा होता कब है? जो कुछ हो रहा है, उसमें कोई विधान है···और उस विधान को स्वीकार करना ही पडेगा। विश्व जी, जीवित रहने के लिए मुझे यहा रहना है···और यहा रहकर मुझे एक सहारे की आवश्यकता है। जीवित रहने के लिये जो भी सहारा मिले, उसे मैं अस्वीकार कैसे कर सकूगी।

शेखर · सुना विश्व। मानिनि राधा याचना नही कर सकती ···अनुरोध ही कर सकती है। तुम कलाकार हो··· दूसरे कलाकार के मान को तो रखना ही पड़ेगा।

विश्व . क्या कहा, कलाकार? वैरागी विश्व यह भूल ही गया था कि वह कलाकार है, और कलाकार मे मानापमान होता है। मैं राधाजी का मान रखूगा शेखर ·· तुम निश्चिन्त रहो।

शेखर धन्यवाद विश्व। तुमने राधा के प्राण की रक्षा की है और मैं जानता हू कि तुम्हारी देखभाल में राधा पूर्ण रूप से स्वस्थ हो जायेगी।

विश्व शेखर ने गलत नही कहा था डॉक्टर···विश्व को पा कर मुरझाई हुई राधा खिलने लगी। राधा रोज विश्व का संगीत सुनती···और विश्व के अनुरोध पर नृत्य भी करती। एक महीने तक शेखर नहीं लौटा और इस एक महीने मे राधा पूर्ण रूप से स्वस्थ हो गयी। विश्व के सम्पर्क मे आकर राधा पूर्ण रूप ने

डॉक्टर : एक विचित्र संयोग था वह।

विश्व : संयोग नहीं डॉक्टर नियति का एक विचित्र खेल था वह। विश्व और राधा दोनों ने एक-दूसरे के जीवन से हटने का कितना प्रयत्न किया, पर वह न हो सका, न हो सका। कौन सा विधान था वह, जो उन्हें फिर से एक साथ खींच लाया। और कौन सा विधान था वह जिसके अनुसार शेखर को अपने राज से किसी आवश्यक कार्य से आने के लिए उसी दिन तार मिला। शेखर को विश्व के पाने पर मानो एक सहारा मिला। उसने विश्व से कहा।

शेखर : विश्व "मुझे बहुत आवश्यक काम से आज ही जाना है, और मुझे लौटने में शायद देर भी लग जाए। राधा के स्वास्थ्य के लिए मैं इसे यहां लाया था, इसे यहां तब तक रहना है जब तक इसका स्वास्थ्य ठीक न हो जाए।

विश्व समझता हूं। फिर मैं क्या करूं।

शेखर राधा को मैं तुम्हारी देखभाल पर छोड़े जाता हूं। मुझसे वादा करो जब तक मैं न आ जाऊं, तब तक तुम यहीं रहोगे।"'कम से कम इतना अधिकार तो मेरा तुम पर है ही।

विश्व : और कोई दूसरा प्रबन्ध नहीं कर सकते हो शेखर ? तुम जानते हो कि मैं दुनिया के बन्धनों को तोड़ चुका हूं। अब मुझे बंधनों से मत बांधो।

राधा रहने दीजिये, विश्व जी को"'अगर ये बन्धन मुक्त रहना चाहते हैं तो आप इनसे क्यों अनुरोध करते हैं। जो सुख और शान्ति इन्हें बन्धन मुक्त होने पर मिली है, उसे मैं कभी भी विश्व जी से नहीं छीनना चाहूंगी।

शेखर : सुना विश्व" कितनी करुणा और विवशता है इस

छोड़ने से नहीं रोका···मैं तुम्हें इस साधारण शिष्टाचार और लोक···मर्यादा के बन्धनों से मुक्त करता हूं। तुम कला की साधना करो···इसमें मुझे प्रसन्नता होगी।

राधा : आप सच कह रहे हैं? बोलिये···क्या आप सच कह रहे हैं कि मैं कला की साधना करती रहूं।

शेखर : हां राधा, मुझे तुम्हारी जैसी अमर कलाकार पत्नी पाने पर गर्व होगा।

विश्व : अपने पति की अनुमति पाकर राधा नगर में रहने लगी। दिन-रात वह कला की साधना करती और इस साधना में विश्व राधा की सहायता करता। लेकिन अदृश्य का विधान चल रहा था और शेखर की पहली पत्नी रानी प्रभावती जो राधा के आने के बाद अपना पद खो चुकी थी···उसने इस परिस्थिति से लाभ उठाया। शेखर के मन्त्री ने रानी प्रभावती का साथ दिया।

प्रभावती : दीवान जी···मैंने सुना है राधा रानी नगर में कला की साधना कर रही है।

मन्त्री : हां, बड़ी रानी···महल में नाचने गाने वालों का जमाव लगा रहता है, स्वतन्त्रता से छोटी रानी सबसे मिलती है, सबसे बातें करती है, सब के सामने नाचती है।

प्रभावती : राजकुल की मर्यादा इस तरह नष्ट हो रही है दीवान जी···आपने राजा साहेब से इस सम्बन्ध में कोई बात की है?

मन्त्री : राज-घराने के मामले में हस्तक्षेप करना मेरे अधिकार के बाहर की बात है, बड़ी रानी···यद्यपि मैंने महाराज से इस बात का संकेत अवश्य कर दिया था।

प्रभावती : तुम्हारे संकेत करने पर महाराज ने क्या कहा?

मन्त्री : उन्होंने हंस कर मेरी बात टाल दी। बोले कि विश्व

कला की आराधिका बन गयी थी।

एक महीने के बाद जब शेखर लौटा···उसने राधा में अभूतपूर्व परिवर्तन देखा ? राधा के इतने स्वास्थ्य लाभ पर उसे अपार हर्ष हुआ। उससे भी अधिक आश्चर्य हुआ और उसने विश्व से उसका रहस्य पूछा।

शेखर विश्व··राधा इतनी जल्दी स्वस्थ हो गई ? इस पर मुझे आश्चर्य होता है ?

विश्व इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं है शेखर ? तुम जानते हो राधा मूलतः एक कलाकार है।

शेखर जानता हूं, विश्व··उसकी कला पर मुग्ध होकर ही तो मैंने उससे विवाह किया था।

विश्व ठीक कहते हो, लेकिन शेखर कला सार्वभौमिक होती है, महलों की दीवारों में बंधकर यह जीवित नहीं रहती। भगवान ने कला की सृष्टि समस्त प्राणियों को सुख और प्रेरणा देने को की है।

शेखर शायद, तुम ठीक कहते हो।

विश्व और राधा ने तुमसे विवाह करके तुम्हारे ममता के बन्धनों में बंधकर यह समझ लिया कि तुम्हारे पद और मर्यादा की रक्षा करना उसका धर्म है और इस लिए उसने यह प्रतिज्ञा कर ली थी कि तुम्हें छोड़कर वह और किसी व्यक्ति के सामने नृत्य न करेगी। तुम्हें याद है वह दिन जब उसने मेरे सामने नृत्य करने से इनकार कर दिया था।

शेखर : समझ गया विश्व··कितनी स्पष्ट बात है, लेकिन यह बात मेरी समझ में आयी ही नहीं। राधा ? राधा ?

राधा : हां···आपने मुझे बुलाया था ?

शेखर : तुमने मुझे बतायी क्यों नहीं अपने अन्तर्द्वन्द्व की बात। मैंने तुम्हें कभी···भी अपनी कला की साधना को

प्रदर्शन की सलाह कभी भी न दी होती । और राधा भी इस प्रस्ताव को स्वीकार करने में हिचकती । लेकिन मैं कहता हूँ···विश्व और राधा···दोनों ही निष्कलंक थे । अपनी कला की एक निष्ठ साधना के बाद राधा अपनी कला के सार्वजनिक प्रदर्शन के लिये उत्सुक थी, विश्व ने उसका प्रबन्ध भी कर दिया । नगर के सबसे बड़े नृत्य भवन मे इस प्रदर्शन का आयोजना की गयी । चारों ओर इस प्रदर्शन की चर्चा हुई । राधा ने इस प्रदर्शन की सूचना शेखर को भी दी, लेकिन वह पत्र शेखर के पास पहुँचने न पाया । षडयन्त्र कारियों से घिरा हुआ शेखर···उसके अन्दर राधा पर विश्वास हटता जाता था ।

प्रदर्शन के एक दिन पहले रानी प्रभावती ने अपनी ओर से शेखर को इस प्रदर्शन की सूचना दी ।

[प्र]भावती : महाराज···छोटी रानी का कुछ समाचार आपको मिला ?

शेखर : नहीं तो···इधर कई दिनों से तो राधा का कोई समाचार मुझे नहीं मिला, और मंत्री जी ने इतना काम मेरे सामने रख दिया कि मैं छोटी रानी को भूल ही गया ।

[प्र]भावती : महाराज बुरा न मानें···आप छोटी रानी को नहीं भूले, छोटी रानी आपको भूल गयी है । आखिर उन्हें तो आपको अपना समाचार देना था ।

शेखर : आश्चर्य है···मैं समझता हूं कि दो-चार दिन के लिए नगर जाकर उससे मिल आऊं । मैंने उस से एक सप्ताह में आने को कहा था, लेकिन मैं एक महीने मे बुरी तरह यहां फंस गया हूं कि यहां से बाहर निकलना ही न हो सका । शायद छोटी रानी इस बात से रुठ गयी ।

के सरक्षण में छोटी रानी है और विश्व के रहते कोई भी अनुचित काम नहीं हो सकता। फिर उन्हें छोटी रानी पर पूर्ण विश्वास है।

प्रभावती · महाराज की मति भ्रष्ट हो गयी है दीवान जी···जहा तक छोटी रानी का प्रश्न है, मुझे उसमे कोई रुचि नही। लेकिन महाराज इस धोखे और जाल के बाहर निकल आवें इतना मैं चाहती हूं, अगर इसमें दस-बीस हजार रुपये भी खर्च हो जायें तो मे उसके लिए तैयार हू।

मन्त्री वड़ी रानी ··मै समझू कि आप अपने मार्ग के काटे को हटाना चाहती है?

प्रभावती · मै अपने हृदय के काटे को हटाना चाहती हू दीवान साहेब···आप मेरी सहायता कीजिये। आपको इसका पुरस्कार मिलेगा।

मन्त्री बहुत अच्छा वडी रानी···आपकी आज्ञा शिरोधार्य है।

विश्व . और इस प्रकार इन दो निष्कलक और पवित्र कलाकारो के विरुद्ध एक घृणित षडयन्त्र रचा गया। रानी प्रभावती और मन्त्री···दोनो ही विश्व और राधा के खिलाफ शेखर के कान इस तरह भरने लगे कि शेखर को इन दोनों के सम्बन्ध मे शक होने लगा, और जब शेखर नगर मे आना चाहता था, मन्त्री किसी न किसी बहाने उसे रोक देते थे।

डाक्टर · क्या, राधा और विश्व के चरित्र निष्कलंक थे?

विश्व पूर्णरूप से डाक्टर···प्रेम निष्कलक होता है इसमे विश्वास करो। वह वासना है जो मनुष्य के चरित्र को गिराती है, और जहां वासना है, वहा छल है, कपट है, प्रेम मे भय नहीं, प्रेम मे दुराव नहीं। यदि भय या दुराव या पाप ही इन दोनों के हृदयो मे होता तो विश्व ने राधा को अपने कला के सार्वभौमिक

ही क्यों दिया जाए ।

शेखर : हूं'''तो कल राधा का नृत्य प्रदर्शन है और मुझे इस की सूचना तक नही । प्रभा, मै आज शाम को नगर जा रहा हू ।

मन्त्री : महाराज आप अपने साथ बडी रानी को भी लेते जाइयें'''यह समझा-बुझा कर छोटी रानी को साथ लेती आएगी ।

प्रभावती : जो कुल को कलंकित कर दे, वह त्याज्य है दीवान साहेब । '''मै राधा का मुह नही देखना चाहती ।

मन्त्री : इतना क्रोध करना महारानी को शोभा नही देता''' गलती मनुष्य से ही होती है, फिर महाराज का अकेले जाना उचित नही । वह बुद्धि और हतप्रभ हो रहे हैं । आप को आज साथ जाना ही चाहिए बड़ी रानी ।

प्रभावती : शायद, महाराज मुझे अपने साथ ले चलना उचित न समझें ।

शेखर : नही प्रभा'''अभी तक मैं भ्रम में था । तुम मेरे साथ चलो'''मैं नगर चल कर अन्तिम निर्णय करूंगा । (विराम'''नृत्य'''संगीत और नृत्य । उस पर विश्व की आवाज)

विश्व : डॉक्टर'''राधा के उस नृत्य प्रदर्शन से लोग मंत्र मुग्ध रह गये । इतना सुन्दर नृत्य किसी ने पहले कभी नहीं देखा था और नृत्य समाप्त होने के बाद दर्शकों की भीड़ राधा को बधाई देने उमड़ पड़ी और उस भीड़ में राधा ने शेखर को देखा, प्रभावती को देखा । शेखर की आखें क्रोध से जल रही थी'''प्रभा, शेखर के बगल में खड़ी हुई मुस्करा रही थी । लेकिन उसकी उस मुस्कराहट में कितना कड़ुवापन था । विश्व राधा की बगल मे खड़ा था'''उसने देखा कि किसी भय की आशंका मे राधा एकाएक काप उठी और उसका चेहरा

प्रभावती . महाराज भूल करते है···आपके न जाने से छोटी रानी को प्रसन्नता ही हुई है ।

शेखर . क्या कहती हो···इस तरह राधा के विरुद्ध आरोप लगाने मे तुम्हे लज्जा नही आती ?

प्रभावती जो सत्य है वह आरोप नही कहलाता महाराज। आपको शायद यह ज्ञात नही कि कल नगर मे छोटी रानी के नृत्य का सार्वजनिक प्रदर्शन होगा, और इस प्रदर्शन की आपको सूचना तक नही दी गयी ।

शेखर प्रभा···क्या कह रही हो, राधा के नृत्य का सार्व-जनिक प्रदर्शन हो और मुझे उसकी सूचना तक न मिले ।

प्रभावती हा, महाराज···राधा आपकी नही है, वह विश्व की है । बिना आपकी आज्ञा लिए वह अपने नृत्य का जन-प्रदर्शन कर रही है, मानो उसके लिए आपका कोई अस्तित्व ही नहीं है, क्यों दीवान जी···कहा है वह निमन्त्रण पत्र···

मन्त्री : जाने दीजिये बड़ी रानी जी, लेकिन महाराज अगर बुरा न मानें तो मं आपको सलाह दूगा कि आप छोटी रानी को यही बुला लीजिए···एक नवयुवक कलाकार के साथ नगर मे छोटी रानी का रहना महाराज की मर्यादा के अनुरूप नहीं है ।

शेखर : दीवान जी, मैं वह निमन्त्रण पत्र देखना चाहता हू जिसमे राधा के नृत्य प्रदर्शन का जिक्र है···और वह आपको कैसे मिला ? आप उत्तर दीजिए ।

मन्त्री : महाराज मेरे एक मित्र ने राधा और विश्व के सम्बन्ध में जो झूठी-सच्ची बातें फैली हुई हैं, उनको लिखते हुए यह निमन्त्रण पत्र भी भेज दिया था ।' कल ही मुझे मिला । न जाने कैसे बड़ी रानी साहिबा ने उसे देख लिया । लेकिन लोक निन्दा को इस तरह बढ़ने

मिला। मैं आज राधा से यह कहने आया हूं कि मैंने उसे त्याग दिया। वह तुम पापात्मा के साथ अपना कलंकित जीवन व्यतीत करने को मुक्त है। लेकिन मेरे यहा अब उसे कोई स्थान नही।

राधा : प्राणनाथ···आप मेरे साथ अन्याय कर रहे हैं···मैं ईश्वर की सौगन्ध खाकर कहती हू कि मैं पवित्र हूं, निष्कलंक हू।

प्रभावती : उस बेचारे ईश्वर को मत घसीटो राधा···पापियो को ईश्वर का नाम लेना शोभा नही देता। हम दोनो होटल में ठहरे हैं तुम्हारे साथ राजभवन मे ठहरने से हमारी आत्मा कलुषित हो जाने का भय है। आज रात को ही तुम राजभवन खाली कर दो।

राधा : मै कहा जाऊंगी इस रात मे···मुझ पर विश्वास करो।

प्रभावती. क्यो, अपने प्रेमी के साथ जाने मे अब सकोच किस बात का ? महाराज तुम्हे त्याग चुके हो है, खुलकर अब पाप से खेलो···विश्व, कलाकार विश्व और कलाकार राधा की बड़ी अच्छी जोड़ी रहेगी।

राधा : विश्व···विश्व···। सुन रहे हो इस लाछन को ? तो सुनो रानी प्रभावती···तुम लोगों ने अकारण जो मेरा अपमान किया है और मुझ पर लाछन लगाया है, भगवान तुम्हे उसके लिये क्षमा करें और महाराज··· यह शरीर आपका हो चुका है···हमेशा आपका रहेगा, लेकिन मेरी आत्मा पर कला का पूर्ण अधिकार है। मैंने जो कुछ किया···वह सच्चे और साफ हृदय से।

शेखर : चुप रह कुलटा कही की।···मैंने तुझे त्याग दिया हमेशा के लिये। राज्य से तेरा गुजारा मिल जायेगा ···लेकिन मेरे राज्य मे या नगर के राज भवन मे तेरे लिये कोई स्थान नहीं। जो कुछ तेरा सामान है वह यहां से आज रात मे ही ले जा···जो कुछ मेरे

पीला पड़ गया। उसने उस ओर देखा जिस ओर राधा निर्निमेष दृष्टि से देख रही थी···और वह भीड़ को चीर कर आगे बढ़ा। उसके आते ही शेखर ने कहा—

शेखर मुझे देखकर आश्चर्य हुआ तुम लोगों को विश्व · मैं तुम दोनों को बधाई देने आया हू।

प्रभावती आपकी शिष्या ने तो जनता को मन्त्र मुग्ध कर दिया विश्व जी। बधाई है आपको कि आपने राजमहिषी को एक समाज नर्तकी बना दिया। राजा राजशेखर अपने अभिन्न मित्र को अपना आभार प्रदर्शन करने आये हैं।

विश्व मै···मै··समझा नहीं, रानी साहिबा।

राधा · मेरे प्राण···आप आ ही गये। कितनी प्रतीक्षा की मैने आपकी ··आज तो मैं निराश हो ही गई थी।

शेखर उस निराशा का नृत्य मैंने अभी-अभी अपनी आखो देखा है राधा रानी···शेखर की राजमहिषी···आज साधारण नर्तकी की भांति दुनिया के सामने प्रकट हुई है···मै धन्य हो गया, मेरा कुल धन्य हो गया।

राधा मैंने तो आपको सूचना दे दी थी, यदि आपको कोई आपत्ति थी तो आप मुझे रोक देते···आपका मुझ पर पूरा अधिकार है।

प्रभावती : अधिकार तुम पर महाराज का नहीं है राधा रानी··· अधिकार तुम पर है विश्व का, जिनके इंगित पर तुम चल रही हो···झूठ से अपने पाप को छुपाना बेकार है, तुमने महाराज के नाम को कलंकित कर दिया है।

विश्व : आप यह क्या कह रही है रानी साहिबा···

शेखर . विश्व···मुझे यह नहीं मालूम था कि मेरा बाल्याकाल का अभिन्न मित्र मेरे साथ ही विश्वासघात करके मेरी पत्नी को पतन के मार्ग पर ले जायेगा, मैंने तुम पर विश्वास किया···और मेरे विश्वास का फल मुझे यह

है ? जो कुछ हो चुका, क्या यह पराकाष्ठा नही है ?

विश्व : तो फिर चलो राधा···मेरे ही यहा चलो ? जहा सत्य है और धर्म है वहा भय कैसा ?

राधा : पर विश्व···तुम जानते हो कि मेरा शरीर मेरे पति का है···मेरी आत्मा तुम्हारी है। बडे सयम की आवश्यकता होगी। अपने ऊपर विश्वास है तुम्हे ।

विश्व अगर राधा को अपने ऊपर विश्वास है तो विश्व उस विश्वास से बल ग्रहण कर सकता है। मैं तुम्हें वचन देता हू राधा कि मैं तुम्हारे विश्वास की हमेशा रक्षा करूंगा।

राधा तो फिर ऐसा ही हो···विश्व···पवित्र और निष्कलक कला और प्रेम की हम दोनो साधना करे ।

(विराम···और फिर विश्व का स्वर)

विश्व . और उसी रात राधा के साथ विश्व इस स्थान पर आ गया जहा तुम आज आये हो डॉक्टर ? विश्व के पिता ने इस सुरम्य स्थान पर यह बगला बनवाया था··· इस बगले के पीछे एक देवालय है। यहां आकर विश्व और राधा रहने लगे। उन दोनो की आत्माएं एक हो गई थी लेकिन दोनो ने वासना को अपने मार्ग मे नही आने दिया। दोनो ने ही ससार से विराग ग्रहण कर लिया था। उस देवालय मे विश्व कीर्तन करता था और राधा नृत्य करके भगवान की आरती उतारती थी। दूर-दूर से कला प्रेमी इन युगल तपस्वियों की कला की आराधना मे योग देने आते थे···यह स्थान कला का तीर्थ बन गया था। सुख शान्ति और सन्तोष के साथ उन दोनो की जीवनचर्या चलती रही।

लेकिन शायद नियति को यह भी सहन न था। राजा राज शेखर ने राधा को आवेश मे आकर छोड दिया था, लेकिन उनके हृदय मे शान्ति नहीं थी।

राज्य में तेरा है वह वहाँ से तू जहा भी होगी भिजवा दिया जायेगा।

राधा : मुझे आपकी कोई चीज नहीं चाहिए···गहना, वस्त्र, रुपया···यह सब अपने पास रखिये। प्रसन्न रहो, रानी प्रभावती···भगवान तुम्हारा भला करें।

(विराम···और फिर विश्व की आवाज)

विश्व : शेखर, राधा को छोड़कर चला गया···परित्यक्ता और निराश्रिता राधा रह गयी···अकेली। उसकी आखो में आज रात का और भविष्य अन्धकार था और उसी समय विश्व उसके सामने आया। अपराधी की भांति सर झुकाये हुये विश्व राधा के सामने खड़ा हो गया और उस समय राधा को ऐसा लगा कि वह अकेली नही है, उसकी आखो के आगे वाला अधकार दूर हो गया। उसने कोमल स्वर मे कहा···

राधा : विश्व···इस सब मे तुम्हारा कोई दोष नही है, समस्त उत्तरदायित्व मेरा है, तुम्हे उदास होने की कोई आवश्यकता नही।

विश्व : नही राधा···इस सब मे मेरा अपराध है···मैं अपने को किसी भी हालत मे क्षमा नही कर सकता। मेरे ही कहने से तुमने यह सब किया···मेरे ही कारण तुम्हे इतना अपमानित और लाछित होना पडा।

राधा : (हसती है) अपमान और लाछन से मैं बहुत ऊपर उठ चुकी हू। जो कुछ हुआ शायद यही होना भी था··· इसको मैं मर कर ही बना सकती थी, मुझे इसका दुःख नही है। प्रश्न यह है कि इस रात मे मैं जाऊ कहा?

विश्व : राधा···किसी होटल मे मैं तुम्हारे रहने का प्रबन्ध किये देता हू। वैसे मेरा घर है, लेकिन शायद मेरे यहा जाना तुम्हारा उचित न होगा।

राधा : क्यों···तुम्हारे घर मे मेरे रहने मे अनुचित ही क्या

विश्व वीणा बजा रहा था। दोनों ही भक्ति और प्रेम में विभोर···और उसी समय राजा राजशेखर ने देवालय में प्रवेश किया। शेखर की आखें जल रही थीं ···उसके हाथ में पिस्तौल थी। वह हत्या करने आया था।

लेकिन डॉक्टर···शेखर ने जो कुछ देखा उससे वह स्तम्भ रह गया। इतनी भक्ति, इतनी तन्मयता? वह अपने को भूल सा गया। कला, भक्ति और प्रेम के उस पवित्र दृश्य को वह अपने में खोया सा देखता रहा, देखता रहा।

और फिर आरती का नृत्य समाप्त हुआ। तब राधा ने शेखर को देखा···विश्व ने शेखर को देखा।

विश्व : तुम शेखर···हाथ में पिस्तौल लिए हुए···तुम?

राधा : आप···मेरी हत्या करने आए हैं आप? कीजिए मैं मरने को तैयार खड़ी हू यह शरीर आपका है···इसे नष्ट कर दीजिए। जिससे मेरी आत्मा को मुक्ति मिले ···चुप क्यों खड़े है···चलाइए गोली।

शेखर · नहीं राधा···मैंने गलती की। मैं तुम्हारी और विश्व की हत्या करने आया था, लेकिन नहीं कर सकूगा अगर चाहो तो तुम मेरे साथ चल सकती हो···मैं अपने पाप का प्रायश्चित करने को प्रस्तुत हूं।

राधा : नहीं···आप मुझे न ले जा सकेंगे ··न ले जा सकेंगे
(राधा के दौड़ने की आवाज)

विश्व : राधा···राधा···रुको···कहां जा रही हो।
(दूर से राधा का स्वर)

राधा : मैं निर्बन्ध हूं···मैं स्वतंत्र हू? मुझे शेखर नहीं ले जा सकेंगे।···किसी तरह न ले जा सकेंगे।
(विराम और फिर एक धमाके का स्वर)

विश्व : राधा, राधा···(विश्व के दौड़ने की आवाज) अरे···

उसके मन की अशान्ति को रानी प्रभावती और मन्त्री लगातार भड़काया करते थे।

शेखर : प्रभा रानी···मुझे कुछ ऐसा लगता है कि मैंने राधा के साथ अन्याय किया है···बहुत सम्भव है वह निष्कलंक रही हो, मैंने उसकी बातों पर विश्वास नहीं किया।

प्रभावती : महाराज यह तो आप जानते ही हैं कि राधा विश्व के साथ रहती है।

शेखर हां, सुना मैंने भी है कि विश्व ने उसको आश्रय दिया है।

प्रभावती आश्रय···। (हंसता है)। आपसे आपकी निधि को वह छीन ले गया महाराज···भूलिए भी उसको।

मन्त्री कैसे भूल सकते हैं उसे महाराज, जिसने इतना बड़ा विश्वासघात किया है। राजमहिषी होकर उसने राज कुल को कलंकित किया है।

प्रभावती लेकिन इसमें दोष है विश्व का, महाराज के बाल्य-काल का अभिन्न मित्र···उसने महाराज के साथ इतना नीच व्यवहार किया।

शेखर : विश्व ··राधा···राधा···विश्व ? हूं ?

मन्त्री आपकी तबीयत ठीक नहीं है महाराज···आप विश्राम कीजिए।

शेखर नहीं दीवान साहेब···मेरी तबीयत ठीक है। बिल्कुल ठीक है। मैं आज शाम को जा रहा हूं। विश्व से अपनी निधि को अलग करने···विश्व और राधा को उनके विश्वासघात का दण्ड देने।
(पार्श्व संगीत···और पार्श्व संगीत के साथ हवा, पानी का स्वर)

विश्व ऐसा ही दिन था वह डॉक्टर···पानी बरस रहा था बिजली चमक रही थी···एक तूफान-सा उमड़ रहा था और देवता के सामने राधा नृत्य कर रही थी,

-चलते

ा है···दूर पर, करुण स्वर 'और
ाथ एक गाना हो रहा है)

छूटा नगर गाव,
गमग है थके पाव।

म्पत है तन, शकित है मन
. है मजिल, धुधले है लोचन,
वना आज असफल जीवन।

हार चुका दाव।
छूटा नगर गाव।
गमग है थके पांव।

है···गाने की समाप्ति पर प्रभास
देती है।)

, वेतहाशा। अव नहीं चला जाता है,

नो नही जा सकता है, भइया ? घड़ो
ाज सुनाई देती है।

··रुका भी नही जा सकता। चलते
चलते रहना, यही नियति का क्रम है।
?

रे, तुम्हारी दवा का भी तो समय हो

यह क्या किया···यह क्या कर डाला ?

शेखर अरे···इस पहाड़ी से कूद कर उसने आत्म हत्या कर ली ··विश्व· ·विश्व ··
(विराम···और फिर विश्व का स्वर)

विश्व मुझे भी इस जीवन का अन्त करना होगा। राधा··· बिना तुम्हारे में जीवित न रह सकूगा।

राधा नही, विश्व·· मेरा समय आ गया था···मै जा रही हू, तुम्हे अभी यही रुकना होगा···देवता की पूजा अधूरी रह गयी है···वह पूजा तुम्हे पूरी करनी होगी।

विश्व कब तक ··कब तक ?

राधा जब तक देवता प्रसन्न न हो जाए और फिर मैं तुम्हारे पास स्वय तुम्हे ले चलने के लिए आऊगी। तब तक तुम मेरी प्रतीक्षा करोगे· ·वचन दो मुझे विश्व ? जब तक मुझे वचन न दोगे तब तक मैं शान्तिपूर्वक न मर सकूगी।

विश्व मैं तुम्हे वचन देता हू।
(विराम···और फिर वही पार्श्व सगीत जो कथा आरम्भ करने के समय उठ रहा था।)

डॉक्टर समझा ? तो आप ही विश्व हैं।

विश्व हा, डॉक्टर · मै ही विश्व हू। पाच वर्ष हो गए मुझे मृत्यु की कामना करते। इन पाच वर्षों तक मैं लगातार यहा रहा हू ··मैने दुनिया नही देखी···मै जीवन को भूल गया हूं। देखते है उस सितार को जो स्वय ही झकृत हो उठा है···और उस झकार के साथ राधा नृत्य कर रही है।

देखो···देखो, डॉक्टर···राधा मुझे चलने का सकेत कर रही है···यह सितार की झकार कितनी प्रखर हो उठी···मुझे चलना है डॉक्टर···विदा ! ···

□

दे तो तेरी सब ग्लानि दूर हो जाए, तेरे प्राणों में जो घुटन भरी है वह दूर हो जाए। तेरी आखो की चमक फिर लौट आए, लेकिन तू कहती नही केवल अनुभव करती है ''बोल मदा, मैं गलत तो नहीं कहता ?

ाकिनी इस दुखद प्रसग को बन्द करो भइया, तुम्हारी तबीयत ठीक नहीं है।

प्रभास इसी से तो मैं बातें करना चाहता हू ''अपने अन्दर की अशान्ति को तुम खा डालो, इसके पहले कि तुम्हारे अन्दर वाली अशान्ति तुम्हे खा जाए।

(कुंडी खटकने की आवाज)

प्रभास देखो, कोई आया है।

(मदाकिनी उठकर दरवाजा खोलती है)

ाकिनी अरे'''गीता तुम, आओ न।

गीता · दो दिन से तुम्हें देखा नहीं, सोचा बीमार-वीमार तो नही पड गयी।

ाकिनी नही, मैं तो बीमार नही पडी, बीमार पड गए भइया। (हसती है) लोग कहते हैं, स्त्रिया दुर्बल होती हैं लेकिन मुझे तो ऐसा लगता है कि पुरुष स्त्रियों से कही अधिक दुर्बल होते हैं।

गीता प्रभास तुम बीमार पड़ गए, तभी तुम दिखाई नही पड़े इतने दिन, अब कैसी तबियत है ?

प्रभास · वैसी ही है, गोकि डॉक्टर कहता है कि मेरी तबियत अच्छी है, मंदा कहती है कि मेरी तबीयत अच्छी है। (हसता है) लेकिन मैं जो बीमार हू, एक अजीब तरह का भारीपन मालूम हो रहा है मुझे। जी चाहता है कि चुपचाप लेटा रहू।

गीता : तो चुपचाप लेटे रहने से तुम्हें रोकता कौन है ?

प्रभास : गीता, इसकी यह दयनीय आकृति, इसे देख रही हो

गया है ।

प्रभास दवा का भी समय हो गया है (हसता है, मन्द और खोखली हसी) दवा चल रही है, समय चल रहा है, मैं चल रहा हू, दुनिया चल रही है। लाओ मदा, तो फिर दवा भी पी लू। मैं जानता हू कि इस दवा मे कोई बल नही है, तीन दिन हो गए हैं इस दवा को पीते, लेकिन दवा चल रही है बेकार, बेमतलब। (दवा पीने का ध्वनि सगीत) शाम की डाक तो आ गयी होगी ?

मदाकिनी हा, दो अखबार थे, बस ।

प्रभास दो अखबार थे, बस। तो अजित का पत्र आज भी नही आया। (एक ठडी सांस लेता है) समय चल रहा है लेकिन इस समय न कोई उत्साह है न उमग है। लडखडाता हुआ, व्यर्थ, भावनाहीन ।

मदाकिनी वह पत्र नही आया भइया, उसकी चिन्ता छोड दो ।

प्रभास मैं तो चिन्ता को छोडना चाहती हू, लेकिन चिन्ता मुझे नही छोडती, मदा, बड़ा कमजोर है यह मनुष्य। न जाने कितने बधनों से वह जकडा हुआ है। यह अजित, बाल्यकाल का मेरा साथी। दुनिया में इसका कोई नही था, अपने सगे भाई की तरह प्यार किया है इसे मैंने ।

मंदाकिनी जानती हू···उसे बेर-बेर कहने से क्या लाभ ?

प्रभास बुरा मान गयी···मेरी मदा। तेरा जीवन नष्ट कर दिया है मैंने इस अजित से तेरा विवाह करके ··यही कहना चाहती है, लेकिन कहती नही, पर मैं तुझे विश्वास दिलाता हू अजित बुरा नही है, यह पशु नही है ।

मंदाकिनी · मैं कब कहती हू भइया ।

प्रभास : यही तो सबसे बडा दुर्भाग्य है, अगर तू जबान से कह

को खो दिया है। शान्त होकर सोचने का समय है तुम्हें। पुरुष सबल होता है। मदा इसीलिए तुम्हारे आश्रय में आई है कि तुम उसकी सहायता कर सको, अगर तुम्ही खुद इस प्रकार असहाय बन गये हो तो मदा का क्या होगा ?

मंदाकिनी हा, गीता बहन, मैं भइया का सहारा लेने आयी थी, मुझे यह क्या पता था कि भइया को मेरे सहारे की आवश्यकता पड़ेगी। लो, पानी पी लो।

प्रभास : नहीं, प्यास नहीं है, गिलास रख दो मदा। गीता··· क्या, वास्तव मे इस सब में मेरा दोष नही है ?

गीता : किसका दोष है···यह सोचने का न समय है और न अवसर है, यह समय तो काम करने का है।

प्रभास काम करने का समय है, और मेरे समस्त शरीर मे अजीब तरह की थकावट भर गयी है। वास्तव मे मैं बड़ा दुर्बल हूं···मैं दूसरों को सहारा नही दे सकता, मुझे दूसरों के सहारे की आवश्यकता है। तुम मुझे सहारा दे सकोगी गीता ?

गीता . (हसती है) कैसी बात करते हो प्रभास, इतने सक्षम, इतने समर्थ। तुम कैसी बात कर रहे हो ?

(बाहर से आवाज़)

आवाज़ श्री प्रभास कुमार···आपके नाम एक तार है।

प्रभास . तार ! (उठने का उपक्रम)

गीता · तुम लेटे रहो प्रभास, मैं तार लिए लेती हू।

प्रभास : लेटे···लेटे भी थक गया हू···लाओ भाई···

(विराम)

मंदाकिनी : किसका तार है भइया···

प्रभास : कान्फ्रेंस मे तुम्हारा आना आवश्यक है···केशव। सुना, गीता लोग समझते हैं कि सम्मेलनों में, उत्सवो मे, सभा सोसाइटियों मे, मेरा सम्मिलित होना जरूरी

न ? लगातार यह आकृति मेरी आंखों के सामने रहती है।

मदाकिनी भइया, मेरे साथ अन्याय मत करो, जब मैं बाहर जाने लगती हू, तब तुम मुझे रोक देते हो, इसमे मेरा क्या दोष है ?

प्रभास तेरा बाहर जाना तो और भी भयानक हो उठता है मेरे लिए। जब तू यहा नही होती, तब तेरी आकृति मेरे सामने रहती है। उस आकृति मे और तुझ मे कितना अन्तर है। तू उदास होते हुये भी शान्त है। लेकिन तेरी आकृति ''वह लगातार मुझे कोसती है। धिक्कारती है।

14/87/1

गीता : वह आकृति मदा की नही प्रभास'''वह आकृति तुम्हारी है। मदा की उस आकृति का निर्माण करने वाले तुम हो, और तुमने मदा की उस आकृति मे अपनी निजी भावना को चित्रित किया है।

प्रभास मेरी निजी भावना'''(हसता है) गीता, कभी-कभी मैं भूल जाता हू, कि मेरे पास निजी भावना नाम की भी कोई चीज है। हर्ष और विषाद, आशा और निराशा ''क्रम से जीवन मे आते हैं और चले जाते है। इनमे कोई भी तो अपने नही बन सकते। जो कुछ अपना है, वह नितान्त सूनेपन की निष्क्रियता है।

गीता तुम्हारी यह बात पहले भी मैं सुन चुकी हूं प्रभास'''

प्रभास और फिर भी तुम्हे मुझसे ग्लानि नही होती, जीवन की रगीनियो से भरी हुई'''नवीन स्वप्नो के जालो को नित्य ही बुनती हुई, तुम फिर भी उस प्रभास को देखने चली आई हो जिसकी नसो का रक्त ठडा पड़ रहा है, जो केवल इसलिए स्थित है कि वह स्थापित कर दिया गया है। मदा ! एक गिलास पानी।

गीता : तुम बहुत दुखी हो प्रभास' 'इस दुख मे तुमने अपने

अपने साथ खींचे लिए चल रही हूं ।

अजित : लेकिन और अब कहां ले चलोगी मुझे ?

विभा : मैं क्या जानूं, कौन किसे ले चलता है ? मुझे तो ऐसा लगता है कि हम सब किसी अनजानी गति से प्रेरित होकर चलते हैं । (जोर से हंसती है)···छोड़ो भी इस बातचीत को । अजित, तुम्हारी यह करुण मुद्रा देखकर कभी-कभी मेरी तबियत होने लगती है कि मैं रोने लगूं ।

अजित : तुम मेरी भावना नहीं समझ रही हो विभा ।

विभा : क्या यह जरूरी है कि हरेक चीज समझी ही जाए ? हमों अजित···देखो, संगीत चल रहा है, लोग अपने को भूलने का प्रयत्न कर रहे हैं और इस समय तुम चाहते हो कि मैं सोचूं समझूं । देखो भुवन और गौरा को···इसी ओर आ रहे हैं···नमस्कार ।

गौरा और भुवन : नमस्कार ।

भुवन : ओहो, अजित साहब हैं···भाई अजित, क्या प्ले लिखा है तुमने···मान गया मैं ।

गौरा : इसमें अजित की कौन-सी बड़ाई है···। विभावरी की एक्टिंग से वह प्ले चमका है···मैं कहती हूं कि विभावरी को हटा लो वहां से···और वह प्ले निरर्थक, भावनाहीन हो जाता है ।

विभा : नहीं गौरा, अगर प्ले में प्राण न हों तो मैं कर ही क्या सकती हूं ? मैं तो केवल अजित के अन्दर वाली भावना को व्यक्त करती हूं ।

भुवन : लोगों का कहना है विभा, कि तुम में अजित की भावना साकार हो गई है ।

विभा : पता नहीं इसमें दोष किसका है···मेरा या अजित का ?

गौरा : दोष क्यों ?

अजित : यही तो मैं भी पूछना चाहता हूं गौरा जी, दोष क्यों ?

है। मैंने इनकार कर दिया था···जो नहीं चाहता है कि जाऊं, लेकिन लोग मानते ही नहीं, मेरी मनोस्थिति तो समझ ही नहीं पाते।

गीता उन लोगों में मैं भी हूं प्रभास, जो तुम्हारी मानसिक स्थिति को नहीं समझ पाये।

प्रभास सच ? तब तो शायद मुझे भी यह कहना पड़ेगा कि मैं भी अपनी मानसिक स्थिति को समझता हूं या नहीं ?

मंदाकिनी मैं तो यह कुछ भी नहीं समझ पाती भइया···सिवा इसके कि जो कुछ हो रहा है, उसे होना ही है। उसे रोकना हमारे वश में नहीं है।

प्रभास : भाग्यवाद, मदा, निराशा, विवशता और घुटन से भरा भाग्यवाद। यह भाग्यवाद गलत है, मैं यह भी नहीं कह सकता। (विराम) (हंसता है) अच्छी बात है ···जो कुछ हो रहा है, उसे होना ही है, उसे रोकना हमारे वश में नहीं है। मैं कान्फ्रेंस में जाऊंगा।··· तुझे तो मेरे जाने से कोई असुविधा न होगी ? मदा ?

गीता : इसमें असुविधा की कौन-सी बात है···जाओ प्रभास, इस अकर्मण्यता और विषाद के ऊपर उठो।

(दृश्य परिवर्तन)

(बैक ग्राउण्ड संगीत···बैण्ड का···हंसी खुशी का वातावरण—इस पर अजित की आवाज आती है)

अजित : लो, हम लोग यहां आ गये विभावरी।

विभा : उफ आज दिन भर का सफर, और कल से मीटिंग, व्याख्यान प्रस्ताव। मैं तो ऊब गयी हूं···इनसे।

अजित : ब्वाय, दो कॉफी। मैं तो तुम्हें इस सम्मेलन में नहीं लाया···

विभा : नहीं अजित मैं तुम्हें ले आई हूं अपने साथ। यही कहना चाहते हो (हंसती है) यही न कि मैं तुम्हें

केशव । और मैं इस सांस्कृतिक सम्मेलन के संयोजकों में एक हूं ।

अजित : संयोजकों की सूची मे आपका नाम तो नही है ।

केशव : जी· जी हा, भूल गया था···नाम तो नामी आदमियों का हुआ करता है, मै केवल कार्यकर्ता संयोजक हू । आप लोगों की देख-रेख अतिथ्य सत्कार सेवा सुश्रुशा ···यह सब मेरी जिम्मेदारी है ।

गौरा : बैठिये न महोदय, आप खड़े क्यों हैं ?

केशव : धन्यवाद, बातचीत दिलचस्प किस्म की होने लगी थी, जिसमे मै अपने को भूल गया था···जी हा, मै भी कलाकार हू और अपने को भूल जाया करता हू, खो दिया करता हू, हा तो, आप लोगों के पास मैं एक प्रार्थना लेकर उपस्थित हुआ था, जिसमे यह सब गड़-बड़ी पैदा हो गयी···

गौरा : या हम लोगों की इस शुष्क नीरस पार्टी मे जान आ गयी थी···अपनी प्रार्थना बैठकर कीजिए ।

केशव : बैठने का मेरे पास समय नहीं ··अपना तो क्रम है चलते रहना, चलते रहना । वैसे आपके कदमों पर बैठकर मैं अपने को भाग्यवान समझता···क्यों अजित जी । (सब लोग हंस पड़ते हैं)

अजित : आप अपनी बात कहिये, समय का अभाव आपको ही नही है हम लोगों को भी है ।

केशव : जी हां, इसमें क्या शक है···अभाव उसे जो उसे अनुभव करें और कुछ लोगों के जीवन में हमेशा अभाव ही रहता है, मैं गलत तो नहीं विभावरी देवी ।

विभा : विभा कहना काफी होगा ।

केशव : धन्यवाद, तब तो मैं समझता हू कि मेरी प्रार्थना अवश्य स्वीकृत हो जायेगी । बात यह है कि मैं चाहता हू कि मेरी कुटी आप कलाकारों के चरण रज

विभा इसलिए कि भावना उन्मुक्त पवन की भांति निराकार है, उसे किसी स्थान पर केन्द्रीयत कर देना, उसे साकार बनाना दोष नहीं तो क्या है ?

एक आवाज : कवित्व, केवल कवित्व और उसके आगे कुछ नहीं। क्षमा कीजिएगा ''आप लोगों की बातें उतनी ही दिलचस्प थी जितना आप लोग हैं'''और इसलिए मैं अपने को नहीं रोक सका।

अजित अपरिचितों के बीच इस तरह आ जाना असभ्यता है'''यह आप जानते हैं ?

केशव · लेकिन मैं अपरिचित नहीं, मैं आप सब लोगों को जानता हूं, आप हैं श्री अजित कुमार ''प्रसिद्ध नाट्य-कार, मैं गलत तो नहीं कहता और आप हैं कुमारी विभावरी, नाटक जगत की सुप्रसिद्ध तारिका'''आप हैं श्री भुवन मोहन''विख्यात संगीतज्ञ और आप''' कुमारी ' नहीं श्रीमती और लक्ष्मी' 'या कुमारी गौरा, कवि चित्रकार, नर्तकी।

भुवन लेकिन महोदय, इससे तो यही साबित हुआ है कि हम लोग विख्यात हैं, और आप हमें जानते हैं, लेकिन हम लोग आप को नहीं जानते।

केशव अपने को धोखा मत दीजिये आप लोग ''आप की जब गाड़ी आई मैं आप लोगों को स्टेशन रिसीव करने गया था। लेकिन मैंने आप लोगों को देखा था'' इस लिए आप लोगों को पहचान ही न सका।

भुवन . नहीं देखा था, भला कैसे पहचान सकते ?

केशव . कुछ लोगों से पूछा आप लोगों की बाबत'' आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि बहुत कम आदमी आप लोगों से परिचित थे'''बहरहाल अपना परिचय मैं आप लोगों को दे ही दूं। मेरा पूरा नाम है केशव चन्द्र'''लेकिन लिखता मैं अपना आधा ही नाम हूं'''

गौरा . पता नहीं, मुझे तो अपने को छोड़कर सभी अजीब लगते हैं।

भुवन : क्या बात कह दी, आपने गौरा जी···अपने को छोड़कर सभी अजीब लगते है।

अजित मेरा मतलब यह था कि यह आदमी अजीब दिखने की कोशिश कर रहा था। बदतमीज कहीं का।

विभा और क्या हम लोग अजीब दिखने की कोशिश नहीं करते···*हम लोग इतने बड़े कलाकार है, इतने प्रसिद्ध* हैं, हमारी प्रसिद्धि आखिर इसी से तो है अजित।

अजित बिलकुल गलत···हम जिन प्रेरणाओं से काम करते हैं, वे हमारी निजी हैं।

विभा : और जिस प्रेरणा से वह, क्या नाम है उसका···

गौरा · केशव।

विभा हां, केशव, जिस प्रेरणा से काम करता है···वह दूसरे की है, इसका क्या सबूत, अजित, तुम्हें जरा-जरा सी बात पर अकारण ही क्रोधित न हो जाना चाहिए।

अजित : विभा···मेरी यह हालत···यह हालत तुम्ही ने तो···

गौरा : अजित जी, यह आपसी बातचीत है···क्यों भुवन, हम लोग चलें। अजित को विभा से शायद बहुत कुछ कहना है···गोकि यह बहुत कुछ किसी अन्य स्थान पर भी कहा जा सकता है।

(दृश्य परिवर्तन)

(रेल के रुकने की आवाज···केशव प्रभास का स्वागत करता है)

केशव : तो तुम आ गये प्रभास···मैं जानता था कि तुम मुझे निराश न करोगे। चेहरा कुछ उतरा हुआ है···क्या हुआ है तुम्हें ?

प्रभास : कुछ नहीं, इधर बीमार पड़ गया था।···बस, यही वजह और बिस्तरा···आने का इरादा नहीं था, लेकिन

से पवित्र हो, इसलिए कल प्रात काल आठ बजे आप लोग मेरे यहा चाय के लिए आमंत्रित है। मेरा दिल बड़ा कमजोर है, इसलिए मुझे निराश न कीजिएगा।

विभा (हसती है) पहली ही दफे मिलकर हृदय तोड़ देना मै पाप समझती हू, मै आऊगी।

भुवन और आप जैसे दिलचस्प आदमी के निमन्त्रण को अस्वीकार करना गलत भी होगा, क्यो गौरा?

गौरा मुझे क्या, अगर तुम मुझे ले चलोगे तो चली जाऊगी, वैसे आदमी यह भले दिखते है।

अजित मुझे क्षमा कीजिये केशव जी···कल मुझे अपने नाटक का अन्तिम भाग प्रकाशक के यहा भेज ही देना होगा ···तो, मै न आ सकूगा।

विभा हा, केशव जी, उन्हें आने को जोर मत दीजिए, कितना सुदर नाटक है उनका।

केशव बडी निराशा होगी अजित जी, मेरी गोष्ठी मे आप जैसा कलाकार न हुआ तो नाक कट जायेगी मेरी। किसी तरह आप आइये अवश्य आइये।

अजित मेरी जान मत खाइये, कह तो दिया कि मैं न आ सकूगा।

केशव आप मुझ से रुष्ट हैं, किस प्रकार आपको तुष्ट करू··· जाता हू, निराश, टूटा हुआ, लेकिन इतनी प्रार्थना है कि अगर आप की तबीयत लिखने से ऊब जाए, या फिर अपने प्लाट पर कहीं अटक जाये तो अवश्य आइयेगा···मुमकिन है वहा आकर आपको राहत मिले, रास्ता साफ-साफ दिख जाए। अच्छा···आप लोग जरूर आइयेगा···नमस्कार।

सब लोग हा-हा, जरूर नमस्कार (विराम)

अजित अजीब-अजीब आदमियों से पाला पड जाया करता है।

विभा हम सभी लोग बडे अजीब हैं क्यों गौरा?

है, लेकिन आपने इन्हें नमस्कार तक नही किया ।

केशव : ओह विभावरी जी···आपको मेरा सादर अभिभादन और बाद में आप सब महिलाओं और महानुभावों को मेरा सादर अभिवादन। कितनी दया की आप लोगों ने इस तुच्छ जन पर···भोला, चाय लाओ, यह चाय आज हम लोगों के बीच मे सुप्रसिद्ध उपन्यासकार, दार्शनिक और न जाने क्या···क्या, श्री प्रभास कुमार के आने से और भी सुस्वाद हो गयी है। उन्ही को लेने के लिए मैं···

कई आवाजें : हियर-हियर !

केशव : और इस अवसर पर मैं कुमारी विभावरी का विशेष रूप से स्वागत करता हूं जिनकी ख्याति तो हम लोगों ने इतनी अधिक सुन रखी है, लेकिन जिनके दर्शनों का सौभाग्य हम लोगों को अभी तक प्राप्त नहीं हुआ था।

दूसरी आवाज़ : अब बस करो केशव, कितना बोलोगे···

भुवन : बोलने भी दो, वाणी खुल गयी है इनकी, विभावरी के आने से···सुन रही हो विभावरी···एक नया पतिंगा।

गौरा : बेचारा केशव। लेकिन कवि इतना वाचाल हो सकता है···इसका मुझे पता न था। क्यों विभा ?

विभा : पता नही, वाचाल होना या न होना, समय और परिस्थिति की बात है। क्यों केशव जी, आप बोलते··· बोलते रुक क्यों गये।

केशव : ताज्जुब की बात है कि आप मेरे दिल की बात कैसे समझ गयी ?

विभा : यह तो साफ है, आपका इतना अधिक बोलना, दूसरों को बोलने के लिए चुनौती है···लेकिन उस दूसरे का बोलना, आपके लिए भयानक रूप से खतरनाक हो सकता है।

तुम्हारे तार पर 'न' नही कर सका।

केशव : यहा आकर तुमने मेरा उपकार नहीं किया, अपना ही उपकार किया है। यह सास्कृतिक...सम्मेलन क्या अच्छा खासा तमाशा समझ लिया है ?

प्रभास तो क्या तुमने भी तमाशा समझ लिया है।

केशव · मान लो, समझ भी लिया, तो इसमें तुम्हारा क्या बिगड गया। गोकि मैंने तुम्हें हमेशा तमाशबीन के रूप में ही देखा है। (हसता है) चलो, तमाशा देखना तुम मेरे घर से ही शुरू करो... अरे...पौने आठ... कुली जल्दी मोटर पर सामान रखो, वे लोग आते ही होंगे।

प्रभास : कौन लोग ?

केशव : घर चलकर देख लेना, तबीयत खुश हो जायेगी...
(मोटर का दरवाजा खुलने और बन्द होने की आवाज, मोटर के स्टार्ट होने का स्वर)

प्रभास : बड़ी तेज मोटर चला रहे हो, इतनी जल्दी क्या है ?

केशव : आठ बजे के पहले घर पर पहुच जाना है...वह भी क्या कहेंगे कि घर पर बुलाकर खुद खिसक गये।

(कट)

एक आवाज · केशव चन्द्र जी हैं ?

नौकर : आइये सरकार। बैठिये कमरे मे आप लोग। वह आते ही होंगे स्टेशन पर गये हैं।

भुवन : अजीब आदमी है...हम लोगों को बुलाकर खुद गायब हो गया।

विभा : इसमें अजीब की क्या बात है...ऐ अभी आठ बजने मे पाच मिनट है। आप लोगों मे मुझसे कोई नाराज तो नहीं है ?

भुवन . आपसे कोई नाराज हो सकता है तो...विभावरी जी क्यों ? कि आपने उन्हें मुख्य अतिथि की तौर से बुलाया

(एक प्रकार का उद्वेलन···पग ध्वनि)

केशव : आइये, अजित कुमार जी···बडी मजेदार बात हो रही है···

अजित : बात यह है···बात···अरे, मैं कमरे का दरवाजा बन्द करना तो भूल ही गया···

प्रभास : अजित···चल कैसे दिये।

अजित : अरे प्रभास !

विभा : क्या आप अजित को जानते हैं ?

प्रभास : एक समय हम दोनो बहुत घनिष्ठ मित्र थे।···लेकिन फिर हम दोनो की धारायें बदलने लगी, एक-दूसरे से दूर होते गये···दूर···दूर ···। बैठो न अजित। बड़ा नेक, बडा शीलवान, बड़ा भला···उफ कितने दिनों बाद हम लोग मिले हैं।

अजित : मैं अभी थोडी देर मे आया प्रभास···शायद मैं अपने कमरे का किवाड बन्द करना भूल आया।

प्रभास : तो, मैं केशव को भेजे देता हूं। जरा···जरा सी बात पर घवराना···इसका यह स्वभाव ही है विभा जी। रूठ जाना, जिद करना, मुह फुला लेना, (हसता है) अभी तक ये आदतें इसमे मौजूद हैं।

विभा : बिल्कुल ठीक प्रभास जी···मैं कभी···कभी आश्चर्य करने लगती थी, इतना बडा कलाकार और इतनी छोटी···छोटी कमजोरिया।

प्रभास : इन कमजोरियो पर आप उससे नाराज न हो जाइयेगा कहो, मैं कहता हू कि बडा निश्छल और भला आदमी है यह अजित।

अजित : क्यो मेरा उपहास कर रहे हो प्रभास···तुम अच्छी तरह जानते हो कि मैं कितना कमजोर हूं।

प्रभास : देखा विभा जी। इसकी यही कमजोरिया तो इसे वह बनाये हैं जो आज यह है। तुम्हारा वह नया नाटक···

प्रभास सतरों से खेलने ही को शायद कुछ लोग जिन्दगी समझते हैं।

केशव बिल्कुल ठीक···बिल्कुल ठीक। अरे प्रभास। विभा जी, यही हमारे मित्र प्रभास कुमार हैं। और आप कुमारी विभावरी···सुप्रसिद्ध तारिका।

प्रभास नमस्कार। क्षमा कीजियेगा कि बिना एक-दूसरे से परिचित हुये ही मैंने आपकी बात का उत्तर दे दिया। लेकिन मैं अपने को रोक नहीं सका।

विभा कोई बात नहीं···अपने को रोक रखना बहुत बड़ा संयम है, और संयम से कलाकार का जन्मजात वैर होता है, क्यों केशव जी···आपका क्या मत है?

गौरा · केशव तो चुनौती देकर भाग खड़ा हुआ। (सब लोग हंसते हैं) आप अपना मत दीजिये प्रभास जी।

प्रभास मेरा मत? मैं भला विभा जी की बात का विरोध कर सकता हूं। पर ईमानदारी की बात तो यह कि संयम और असंयम की सीमा को मैं आज तक नहीं जान पाया।

भुवन आप आज तक कुछ भी जान पाये हैं? (हल्की हंसी)

प्रभास . बस, केवल एक बात ··रुकना निष्क्रियता है, मृत्यु है। निर्णय और अबाध गति से चलते रहना ही जीवन है ···और संयम और नियम सामाजिक प्रतिबन्ध भर हैं जिन पर कलाकार को विश्वास नहीं है, इस बात का कहने में तो मैं असंयम के दोष का भागी नहीं हूं विभा जी?

विभा आपकी करुण मुद्रा ही यह बतलाती है कि आप पूरी तरह निर्दोष हैं। (जोरों की हंसी)

प्रभास पता नहीं, आपकी बात में व्यंगात्मक अभिनय है, या आडम्बरी निश्छलता है···लेकिन इस प्रशंसा के लिए आपको अनेकानेक धन्यवाद।

प्रभास : क्या बतलाऊ, अजीब खोया सा रहा हू इन दिनों, अपने इर्द-गिर्द क्या हो रहा है'''इसका मुझे पता ही नही चला ।

भुवन : मैं गौरा जी से प्रार्थना करूगा कि अपनी कुछ कविताए सुनाए।

प्रभास . नहीं भुवन जी, सुनने की चीज होती है गीत, कविता तो पढने की चीज है, आप अपना एक गीत सुनाइये ।

विभा . मैं समझती हूं कि कविता और गीत'''इनसे अधिक अच्छा होगा बातें करना अपनी कहना दूसरों की सुनना ।

प्रभास : अपनी तो सब कहना चाहते हैं'''दूसरो की सुनने को लोग तैयार नहीं होते । दूसरो की बातें लोग अभिनय के रूप मे ही सुनना पसन्द करते है ।

विभा · और जो अपनी बात सुनाना चाहता है वह भी अभिनय ही करता है, क्यों प्रभास जी, तो मैं समझ लू कि आप भी बहुत बड़े अभिनेता है ।

केशव : वेल सेड'''वेल सेड। प्रभास अभिनेता है'''मैंने इस बात की कल्पना ही नही की थी ।

प्रभास : मैंने भी इस बात की कल्पना नही की थी विभा जी, लेकिन देखता हूं कि आपकी बात मे सत्य है । यह साहित्य, कला'''यह सब बहुत बड़ा अभिनय ही है । हा, गौरा जी'''विभावरी जी का अभिनय तो स्टेज पर देखने को मिलता है'''आपकी कविता सुनने का अवसर मुझे शायद ही मिले। इधर बहुत दिनों से कोई गीत नही सुना है'''एक गीत सुना दीजिये ।

गौरा : कौन-सा गीत सुनाऊं ? क्यो भुवन ?

भुवन : वही'''कल बरसा था अलि बादल'''

गौरा : वह गीत अच्छी बात है । लेकिन सूनी रजनी, सूना मा मन वाला गीत जो अभी हाल मे लिखा है ।

स्वप्न का रहस्य···मच कहता हूं, मैंने अपने को उस रहस्य मे खो दिया । क्या लिख रहे हो इन दिनो ?

विभा मुझसे पूछिये आप कि यह क्या लिख रहे हैं, एक हीरो और उसकी दो प्रेमिका, वही ट्रैंगिल···लेकिन इस प्लाट मे विलेन कोई नही है; दोनों नायिकाएं भली लडकिया है ।

प्रभास तब तो वडा दिलचस्प होगा यह नाटक ।

अजित इसमें विलेन है खुद हीरो, स्वभाव से नही, परिस्थितियो से ।

विभा · प्रभास जी, मुझे तो कभी-कभी ऐसा लगने लगता है कि इस नाटक मे हीरो के रूप मे अजित स्वयं को चित्रित कर रहे हैं । इसकी एक हीरोइन में तो मैं अपना प्रतिबिम्ब साफ देखती हू, लेकिन यह दूसरी हीरोइन कौन है, इसे जानने के लिए मैं उत्सुक हूं ।

प्रभास क्या यह आवश्यक है कि दूसरी हीरोइन अजित के जीवन मे मौजूद ही हो ।

विभा जहा दो सत्य है वहा तीसरे सत्य की मैं कल्पना कर सकती हू ।

प्रभास लेकिन विभा जी, दो सत्य मिलकर तीसरी कल्पना को जन्म भी दे तो सकते हैं ।

अजित . छोडो भी इस बात को ।

भुवन यही मै भी कहने वाला था । गौरा जी की नयी कविता की पुस्तक प्रकाशित हुई और मुझे उसकी सूचना तक नही मिली ।

विभा . भुवन का कहना है कि उस पुस्तक की साहित्य मे धूम है···क्यों भुवन जी ?

केशव : रजनी के स्वर···सुन्दर कविताए ।

गौरा : धन्यवाद···टूटे···फूटे शब्दो में अपनी भावनायें अंकित कर दी है ।

भास · नयी परिस्थिति···नया अनुभव ।

विभा : नयी महफिल···नया पतिंगा (हसी) ।

(दृश्य परिवर्तन)

विभा : बड़ी देर हो गयी, खाना यही खा लीजिए, तब जाइयेगा ।

प्रभास . मुझे तो कोई आपत्ति नही लेकिन केशव मेरा इन्तजार कर रहा होगा ।

विभा . करने भी दीजिए इन्तजार, जब इन्तजार करते··· करते थक जाएगा तब खुद ही खा लेगा ।

प्रभास : आपने कभी किसी का इन्तजार किया है विभावरी जी ?

विभा · शायद कभी किया है, और इसके बाद इस नतीजे पर पहुंची हूं कि इन्तजार करना गलत है, जो सामने है वही सत्य है, जिस की प्रतीक्षा की जाए वह केवल कल्पना है, जो अधिकाश मे झूठी साबित होती है ।

प्रभास · मेरा ख्याल है कि अजित आपकी प्रतीक्षा कर रहा होगा।

विभा : तो वह बेवकूफ है (हसती है) जो सामने है वही सत्य है । प्रभास जी, आइये खाना खाकर जाइयेगा ।

प्रभास . आप कितनी हद तक हृदयहीन कही जा सकती है विभावरी जी । दूसरे की भावना की इतनी अधिक उपेक्षा, यह मेरी समझ मे नही आती ।

विभा : दूसरे की भावना की परवाह कौन करता है ? वह अपनी ही भावना है, जो हमे किसी दूसरे की भावना की परवाह कराती है । आप कहते है कि आपके केशव के साथ न खाने से, केशव की भावना को चोट पहुचेगी, अगर मैं कहू कि मेरे साथ आप के न खाने से, मेरी भावना को चोट पहुचेगी, तब आप क्या करेंगे ?

प्रभास : छोड़िए इस बात को, आपका होटल आ गया ।

विभा : हा, और हम लोग भी आ गए । आइए न, मेरी खातिर न सही तो अजित की ही खातिर, आप ही ने

प्रभास : हा-हां''' वही सुनाइए !)

गौरा : नहीं, भुवन का कहना है कि कल बरसा था अलि बादल
सुनाऊं तो वही सुनाती हूं (गाती है)
कल बरसा था अलि बादल, बरसी है आज तन्हाई
मेरे नयनो की छवि में प्रियतम की छवि खिच आयी।
भर'''भर कर ठण्डी आहें,
फैला कर सूनी'''बाहें
लेकर पुलकन की चाहें
मैं देख रही थी आहें।
आसू की जलधार में'''प्रिय की प्रतिमा मुसकाए
नीरव रजनी के उर में' 'थी प्रात की अरुणाई।

भुवन . अहा ! अहा ! नीरव रजनी के उर में थी, प्रात: की अरुणाई। क्यो नही करती ?

विभा सुन्दर गीत'''क्यो ' अरे, अजित कहा है ?

प्रभास (हंसता है) ! शायद अपना नाटक पूरा करने को चला गया है। लेकिन बड़ा परिवर्तन हो गया है इस अजित में, ऐसा लगता है कि अपने को खो दिया है '''बेचारा अजित नही विभावरी जी। अपने को पा लेना ही जिन्दगी है।

विभा अपने को खो देना ही शायद जिन्दगी है।

प्रभास अपने को जिसने खो दिया है, वास्तविकता को खो दिया है।

विभा . (हसती है) सत्य और वास्तविकता तो यह है कि अजित जी ने मुझे इस शहर मे घुमाने का वायदा किया था, अब क्या होगा ?

प्रभास अगर आप मुझे इस योग्य समझें कि आप मुझे इस नगर मे घुमा दे तो मैं आपकी सेवा में मौजूद हूं।

विभा : (ठण्डी सांस भरती है) आप ही के साथ चलना होगा। (हसती है) आदमी आप काफी दिलचस्प लगते है।

से प्रेम नहीं करती, मोहन बेयरा से बोला कि दो आदमियों का खाना यहीं ले आए।

प्रभास : मैंने आपसे कहा न कि केशव मेरी प्रतीक्षा कर रहा होगा।

विभा : और मैंने आपसे कहा न कि प्रतीक्षा करना सबसे बड़ी बेवकूफी है।

(अजित का प्रवेश)

अजित : विभा ! अरे प्रभास तुम ?

विभा : तुम्हारे मित्र कितने अच्छे हैं अजित, सुबह से ही ये मेरे साथ हैं। ऐसा दिखता है कि हर स्थान से परिचित हैं, हर जगह यह जानते हैं।

प्रभास . बैठो न···तुमने शायद अभी खाना नहीं खाया, तुम्हारे लिए भी खाना विभावरी जी ने मंगाया है···तुम्हारी प्रतीक्षा कर रही थी यह।

विभा : नहीं अजित, मैंने तो तुम्हारे मित्र के लिए खाना मगवाया है, सुबह से मैं इन्हें साथ घुमा रही हूं, थक गए होंगे।

अजित : प्रभास, केशव तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा है।

विभा : मैं कहती हू प्रतीक्षा करना बेवकूफी है, अपना खाना भी मंगवा लो अजित।

प्रभास : मुझे क्षमा कीजिएगा उसकी भावना को ठेस लगेगी।

विभा : आपको केशव की भावना का क्या मेरी भावना से अधिक ख्याल है ? अगर है तो आप जाइए, मैं आपको जरा भी न रोकूंगी।

प्रभास : आप तो हठ कर रही हैं।

विभा : मैं इस सम्बन्ध में अब कुछ न कहूंगी, जो कहना था वह मैं कह चुकी।

प्रभास : अच्छी बात है···आपके हठ की रक्षा करनी ही पड़ेगी।

विभा : (हंसकर) धन्यवाद।

कहा था कि आप का वह पुराना परिचित है, लेकिन आपका कभी उसने जिक्र नहीं किया।

प्रभास क्या, यह आवश्यक है कि वह अपने सब परिचितों का जिक्र आप से करता…

विभा शायद आपके नाम में तो कोई ऐसी बात छिपाने की नहीं थी। आपके उपन्यासों की चर्चा हम लोगों ने हुई है, उनके गुण और अवगुणों की विवेचना भी हम दोनों ने की है, हां मोहन ? अजित कहां है ?

मोहन वह आपका इन्तजार करते-करते जब थक गए, तब आपको ढूंढने चले गए।

विभा (हंसती है) कितना भोला है यह अजित, कभी-कभी तो इसका भोलापन बेवकूफी की सीमा पर पहुंच जाता है। तब मुझे क्रोध आने लगता है।

प्रभास भावना की प्रखरता कभी-कभी पागलपन का रूप धारण कर लेती है। हां, तो मैं पूछ रहा था कि क्या आप अजित के सम्बन्ध में कुछ जानती हैं ?

विभा : ओह…आप उसके विवाहित होने की बात कर रहे हैं क्या ? मैं जानती हूं कि वह विवाहित है, मैंने उसकी पत्नी को भी देखा है। बड़ी भली लड़की है वह, मुझे उस पर दुख है।

प्रभास उस पर दुःख है आपको ?

विभा हां, इसलिए कि वह प्रेम करती है, बेचारी सदा, मेरी समझ में नहीं आता कि वह प्रेम क्यों करती है ? आखिर क्या है ऐसा अजित में जो उससे प्रेम किया जाए।

प्रभास : अगर आप बुरा न मानें तो यही प्रश्न मैं आपसे भी कर सकता हूं ?

विभा . मैं अजित से प्रेम करती हूं…क्या आप यह समझते हैं ? (हंसती है) बड़ा गलत समझते हैं आप, मैं किसी

केशव : प्रभास निर्दोप और निष्कलक है अजित कुमार जी।

अजित जो मनुष्य है वह निष्कलक और निर्दोप हो ही नही सकता। जो निष्कलक और निर्दोप दिखता है, वह ढोग रचता है और आपको यह मानना पडेगा कि ढोग सबसे बडा अवगुण है।

केशव : आपका मन स्वस्थ नहीं है अजित कुमार जी, आप पर प्रभास ने अधिक विश्वास किया था।

अजित : और मैंने उनके विश्वास की रक्षा नही की···यही कहना चाहते हैं आप ? लेकिन मान भी लीजिए कि मैंने विश्वासघात किया···यद्यपि मैं सत्य कहता हू कि इसमें मेरा दोप नही था, तो क्या मेरे साथ विश्वास-घात करने से वे मुझ से ऊचे उठ गये ?

केशव : मैं नहीं समझा···उन्होंने आपसे क्या विश्वासघात किया ?

अजित : यह तुम उनसे पूछो···देख रहे हो, यह इधर ही आ रहे है मुझे ढूढते हुवे। यहा मिलकर हमें कुछ बातें करनी हैं।

प्रभास : अरे केशव, तुम यहा बम्बई में ?

केशव : हा, आज सुबह आया हू, तुम्हे ढूढते हुये।

प्रभास मुझे ढूढते हुये ? क्यो ऐसी क्या बात थी ?

केशव गीता का पत्र मेरे पास आया था। पत्रो का उत्तर उसे नही मिला, वडी चिन्तित है।

प्रभास : इसमें चिन्ता की क्या बात ? मैं उनके पत्रों का उत्तर नही दे सका क्योंकि पत्र लिखने के मूड मे नहीं था।

केशव : प्रभास, मैं तुम्हें पहचान नही पा रहा हू···तुम कितना बदल गये हो ?

अजित : (हसता है) तो श्री केशव चन्द्र जी, आप अपने आराध्य को नही पहचान पा रहे हैं, यह रूप आपने नहीं देखा

(दृश्य परिवर्तन)

केशव तो मैंने आपको पहचान लिया, आप मुझे पहचान पाये या नहीं, यह दूसरी बात है।

अजित लेकिन आप कौन है, मैंने आपको कहीं देखा जरूर है।

केशव जी हां, आपने मुझे देखा है, आपने मेरे यहां चाय भी पी है, मेरे घर पर विभावरी देवी को ढूढने आए थे ? अपना नाम बतलाऊं कि नाम आपको याद है।

अजित कुछ याद नही। कुछ धुधली-धुधली सी यह दुनिया दिख रही है इसी से यह मालूम होता है कि मैं रिक्त हूं और दुनिया स्थित है, नही तो नहीं मैं भी कुछ नहीं। मुझे शक होने लगता है। बैठिए।

केशव : माफ कीजिए···आपको पहचानने मे शायद भूल हुई।

अजित · नहीं, आप नहीं भूले···आपके पास भूलने के लिए है भी तो कुछ नही, आपकी कोठरी है और सब कुछ याद है। भूला केवल मैं ही हू, चाय पीजिएगा कि लेमन ?

केशव · यह आपकी क्या हालत है, श्री अजित कुमार।

अजित · मेरी हालत अच्छी तो है। हां, याद आ रहा है···आप के यहा से ही मेरे जीवन के नाटक का यह दुःखान्त अक आरम्भ होता है, जिस पर मैं हूं···आप का नाम केशव है न।

केशव . जी हां, केशव चन्द्र। तो आप मुझे भूले नहीं है।

अजित : आपको मैं भूल गया था, आपका नाम नहीं भूल सका। आपका नाम उन परिस्थितियो का एक आवश्यक मर्म है जिन्होंने मेरी जीवन गति मे एक प्रकार की हलचल मचा दी थी। आप प्रभास के मित्र है न।

केशव : मित्र नहीं, उनका उपासक।

अजित : केशव चन्द्र जी उपासना उसकी की जाती है जो निर्दोष हो, निष्कलक हो। है न ऐसा।

अजित : तुम यहां से लौट आओ प्रभास, मैंने तुम्हें इतना ही कहने को बुलाया है। मेरी विभावरी को तुम मुझसे मत छीनो, मैं तुम्हारे हाथ जोड़ता हूं।

प्रभास : अजित, विभावरी न कभी किसी की थी, और न कभी किसी की बन सकती है। जो उसके सामने आया वह एक खिलौने की भांति'''जब एक खिलौने से उसका मन ऊबा, तभी उसने अपना खिलौना बदल दिया।

केशव : *सुना, अजित कुमार जी आपने ''आप खिलौना थे''* अब प्रभास खिलौना बन गये हैं। क्यों प्रभास, यही कहना चाहते हो कि कैफियत खेलने वाला दे सकता है, खिलौना नहीं दे सकता।

प्रभास : बड़ी जल्दी सत्य को तुमने देख लिया केशव, लेकिन यह केवल अर्धसत्य है जो कभी-कभी मिथ्या से भी भयानक होता है, क्योंकि मिथ्या का तो परित्याग किया जा सकता है, अर्धसत्य का परित्याग नहीं हो सकता।

अजित : मैं तुमसे ये दार्शनिक और मनोवैज्ञानिक बातें सुनने नहीं आया हूं। प्रभास, मैं अपनी समस्या का निदान पाना चाहता हूं।

प्रभास : अजित, हम चेतन और सप्राण मानव बारी-बारी से खेलने वाले और खिलौने का पार्ट अदा करते रहते हैं। विभावरी खेलने वाली है, तुम खिलौने थे, तुम खेलने वाले हो, विभावरी खिलौना है।

केशव : तुम तो पहेली बुझा रहे हो प्रभास ?

प्रभास : बात बड़ी स्पष्ट है। जिन्दगी जहां गम्भीर सयम और साधना है, वहीं उसका दूसरा पहलू खेल का भी है। अजित समझते हैं कि जिन्दगी में खिलवाड़ करना केवल उनका ही अधिकार है'''वह यह भूल जाते हैं कि जिन्दगी के साथ मैं भी खिलवाड़ कर सकता हूं।

आ-इनफ्र ? बैठिये प्रभास जी, चाय पीजियेगा या प्रेमर्स ?

प्रभास : मुझे ढूँढने के लिए आना ''यह बात ही मेरी समझ मे नही आ रही है। मदा को मैंने लिख दिया था, क्या इतना काफी नही था।

केशव : मैंने कह दिया न कि मै गीता का पत्र पाकर आया हूं, गीता तुम्हारे लिए बहुत चिन्तित है।

प्रभास : गीता'''हूं, तो तुम्हे गीता ने भेजा है ? पत्रों के बाद उसने तुम्हे भेजा है। यह देखने के लिए कि मै कहा हू, क्या कर रहा हू मेरे जीवन की गति क्या है ? तो मुझे तुम से भी बाते करनी होगी ? तुम्हे भी कैफियत देनी होगी। सुन रहे हो अजित ?

अजित : हा, सुन रहा हू, यद्यपि समझ मे नही आ रहा है।

प्रभास : तुमसे भी बाते करूगा, तुम्हे भी कैफियत दूगा। शायद अजित से जो बातचीत होगी, उसी मे तुम्हे बहुत कुछ मिल जायेगा। हा, तो फिर तुम अपनी बात शुरू करो अजित, तुम मुझसे कुछ कहना चाहते थे न ?

अजित : मैं तुमसे केवल यह पूछना चाहता था कि तुम यहा क्यो आये हो ?

प्रभास : यह बात तुम विभावरी से पूछते तो अच्छा था, क्योकि इसका उत्तर मेरे पास नही है, विभावरी के पास है।

अजित : तुम्हारे यहा आने का उत्तर विभावरी के पास है ?

प्रभास : हा, मैं यहा नही आया हू विभावरी मुझे यहा ले आयी है। वह यहा मुझे क्यो ले आयी है इसका उत्तर तुम्हे विभावरी के पास मिलेगा।

अजित : तुम झूठ बोल रहे हो प्रभास, तुम्हे यहा मदा ने भेजा है कि विभावरी से मुझे तुम अलग कर दो।

प्रभास : मदा का अपमान मत करो अजित, मेरा तुम जितना चाहे अपमान कर लो।

करता रहा है।

अजित : तुम्हारे मुह से इतनी ऊची बाते शोभा नही देती।

प्रभास : मैंने तो तुम्हें बातें करने के लिए यहां नही बुलाया था। तो अब मै चलूगा, हा केशव, कहा ठहरे हो···मेरा पता यह मेरे कार्ड पर लिखा है···कल सुबह आना, इस समय तो मै जल्दी मे हू। क्षमा करना।

(दृश्य परिवर्तन)

नौकर : बीबी जी चाय तैयार है।

विभा : उफ्···आठ बज गए, तुमने मुझे पहले क्यो नही जगा दिया (घण्टी) देखो कौन है ?

अजित . विभावरी।

विभा अरे तुम हो अजित, अभी-अभी सोकर उठी हू (हसती है) नौकर से कहा था कि जल्दी जगा देना, बड़े अच्छे मौके से आए। मोहन···एक प्याली और ले आओ, यह कुर्सी खीच लो।

अजित : मुझे तुमसे कुछ जरूरी बातें करनी हैं।

विभा : मेरे सामने तो सब से जरूरी है चाय पीना, इसके बाद और कुछ।

अजित : इस प्रश्न का तुमसे बहुत सम्बन्ध है विभा, इस तरह से तुम मेरी बात नही टाल सकती।

विभा : तुम्हारे जीवन-मरण का मुझसे कुछ सम्बन्ध हो सकता है, इस पर मुझे सोचना पड़ेगा। और तुम देख रहे हो कि मैंने अभी तक चाय नहीं पी है। फिर भला सोचने और समझने के मूड़ मे मै कैसे हो सकती हू, इस प्रश्न पर फिर कभी बात करना···इस समय तो चाय पियो मेरे साथ; इधर कई दिनो से तुम आए नहीं, कुछ अजीब सूना-सूना सा लग रहा था मुझे।

अजित : तुमने मुझे फोन ही कर दिया होता, मै प्रतीक्षा कर रहा था कि तुम मुझे बुलाओगी।

केशव प्रभास, प्रभास, यह मैं क्या सुन रहा हूं तुमसे ? तु॰ इतना गिर गये हो'' गीता की आशंका ठीक ही थी।

प्रभास असयम और अनैतिकता के इस वातावरण में गीता और मदा के नाम मत लो केशव, हम लोग जिस दुनिया में इस समय हैं वह बिल्कुल दूसरी है। इस दुनिया की मान्यनायें भिन्न है। दृष्टि कोण दूसरे ही हैं। तो अजित मनुष्यों को खिलौना समझने वाली तुम्हारी विभावरी से मैं खिलवाड़ कर रहा हू।

अजित अपने को धोखा मत दो प्रभास, अभी तुम स्वीकार कर चुके हो कि विभावरी के लिए तुम खिलौना हो।

प्रभास. (हसता है) अर्धसत्य, केवल अर्धसत्य। मैं कह चुका हू अजित कि इस सप्राण मानव बारी-बारी से खिलाने और खेलने वाले हैं।

अजित (करुण स्वर मे) मैं तुमसे प्रार्थना करता हू प्रभास कि यहां से चले जाओ नही तो मेरा जीवन नष्ट हो जायेगा। मेरे ऊपर दया करो।

प्रभास· तुमने कब किसके ऊपर दया की है अजित, और मैं दया करने वाला होता कौन हू ? दया की प्रार्थना तुम विभावरी से करो जाकर। अब मैं चलूगा विभावरी मेरा इन्तजार कर रही होगी।

अजित· तो मै समझ लू कि तुम भी पतन के उस गर्त मे जा गिरे हो जिस मे गिरने के कारण मैं दुनिया द्वारा त्याज्य, अपमानित और लाछित समझा जाता हू। सुन रहे है आप केशव चन्द्र जी हमारी बातचीत के आप साक्षी है।

प्रभास मैंने तो तुम्हे कभी पतित नही कहा अजित, और तो और उस मदा ने भी तुम्हे कभी पतित नही कहा जिसके जीवन को तुमने नष्ट कर दिया है। तुम्हारे अन्दर वाला नेक और चेतन मानव ही तुम्हे लाछित

अजित : विभा, क्या मेरे प्रति तुम्हारा प्रेम छल और धोखा था ?

विभा : प्रेम, तुम्हारे प्रति मेरा प्रेम ? तुम जो एक स्त्री के न हो सके तुम दूसरी स्त्री के क्या हो सकोगे।

अजित : विभा…

विभा : चुप रहो, तुम मेरी बातें सुनने आए हो, तो मैं अपनी बात कह रही हूं, प्रभास मेरे पास नहीं आए, मैं प्रभास को अपने पास लाई हूं। मेरे जीवन में एक भयानक सूनापन था। उस सूनेपन को अपने जीवन में तुम्हें लाकर मैं दूर करना चाहती थी, लेकिन इसमें मुझे सफलता नहीं मिली। व्यक्तित्व का अभाव, असंयम, उच्छृंखलता…केवल यही तुममें मिला मुझे।

अजित : बस करो…बस करो।

विभा : नहीं, अपनी बात कहूंगी, तुम मुझे रोक न सकोगे। तुम्हारी उपस्थिति में मुझे अपने अन्दर वाला अभाव और भी भयानक रूप से अखरने लगता था और उस समय अनायास ही मुझे प्रभास मिले और मैंने देखा कि जो कुछ मैं चाहती हूं वह उस व्यक्ति में मूर्तिमान है। तुम प्रभास को दोष मत दो, उनसे शत्रुता मत करो, वह तुमसे बहुत ऊंचे हैं।

अजित : मैं, तुमसे बेहद प्रेम करता हूं विभा…मैं बर्दाश्त नहीं कर सकता कि मेरी विभावरी किसी दूसरे की हो जाए।

विभा : प्रेम शब्द का व्यंग्य मत करो अजित…प्रेम का गुण पाना नहीं है, अपने को समर्पित कर देना है, आज मुझे यह जानकर अपने ऊपर ग्लानि हुई कि मंदाकिनी प्रभास की बहन है।

अजित : विभावरी, तुम नहीं जानती कि यह मेरे जीवन-मरण का प्रश्न है।

विभा : इस इन्तजार पर मुझे विश्वास नही अजित, कोई भी सुनापन ऐसा नही है जो स्थायी हो, फिर प्रभास तो हैं ही बड़े भले आदमी। वे तुम्हारे मित्र···गम्भीर, विचारवान, सयत और शिष्ट।

अजित : मैं प्रभास के विषय मे ही बात करना चाहता था।

विभा : मैं भी ऐसा ही समझती थी। कुछ ऐसा लगता है कि तुम्हारी और उनकी मित्रता मे कही कुछ गाठ सी पड गयी है, मैंने उनसे इतना पूछा लेकिन उन्होंने कोई उत्तर नही दिया, बड़े भले आदमी हैं वह···

अजित : विभा, प्रभास मेरा मित्र नही है, वह मेरा सबसे बड़ा शत्रु है।

विभा : तुम्हारा शत्रु, क्या कह रहे हो? मुझसे तो उन्होने हमेशा तुम्हारी तारीफ ही की है, तुम्हारे प्रति कितनी सद्भावनाएं और सहानुभूति है उनमें, शायद तुम नही जानते।

अजित : मैं जानता हूं, अच्छी तरह जानता हूं। विभा, क्या प्रभास ने तुम्हें यह कभी बतलाया कि वह मेरी पत्नी मदाकिनी का भाई है।

विभा : *प्रभास मदाकिनी का भाई···* (*हंसती है*) क्या मजाक कर रहे हो, प्रभास मदाकिनी का भाई है। और यह बात इतने दिनो तक न तुमने बतलायी न प्रभास ने।

अजित : प्रभास, मुझे तुमसे अलग करने आया है विभा।

विभा : स्वाभाविक ही है (हंसती है) बिल्कुल स्वाभाविक है यद्यपि उसने इसका प्रयत्न अभी तक नही किया है।

अजित : विभा···प्रभास ने हम दोनो को एक-दूसरे से अलग कर दिया है।

विभा : गलत कह रहे हो अजित, हम दोनों हमेशा ही एक-दूसरे से अलग रहे हैं।

मदाकिनी : गीता···गीता···आओ गीता बहन ।

प्रभास : गीता···नमस्कार, इस तरह से दरवाजे पर क्यों खड़ी हो ?

गीता . नमस्कार प्रभास, कहो मदा, कैसी तबीयत है ?

मदाकिनी . वैसी ही हूं, बहन, ऐसा दिखता है कि मेरे जीवन मे सुख नहीं है शान्ति नही है । भगवान ने दुर्भाग्य से खेलने के लिए ही मुझे जन्म दिया है ।

गीता भगवान नही बहन, हम मानव स्वयं ही अपने दुर्भाग्य का निर्माण करते हैं । अजित की कोई खबर मिली ?

मंदाकिनी : भइया से पूछो, भइया उन्हें लेने आये थे यहां···क्यों भइया तुम उन्हे लेने ही आए थे न मेरे लिए ?

गीता . (हसती है) उन्हें लेने नही आए थे, उन्हें भेजने आए थे । लेने आये होते तो अजित के साथ स्वय भी चलते ।

प्रभास : गीता, मेरे साथ अन्याय कर रही हो ।

गीता : अन्याय, नही प्रभास, मैं सत्य कह रही हूं, तुम अजित को बचाने नही आए थे तुम अपने को खोने आये थे । (टेलीफोन की घण्टी बजती है)

प्रभास : हलो, अरे विभा तुम···हा हा, मैं दस मिनट के अन्दर ही पहुच जाऊंगा, हा, इन्तजार करना ।

गीता : और तुमने अपने को खो दिया है प्रभास, बुरी तरह खो दिया है ।

मंदाकिनी : भइया, तुम मत जाओ, यहा हम लोगों के पास बैठो ।

प्रभास : पागलपन की बात न करो···तुम्हारे पास गीता है, केशव है, मैं घण्टे डेढ़ घण्टे मे लौट आऊंगा ।

गीता : नहीं प्रभास, जाओ, हम लोग मंदा के पास हैं, केवल मंदा के लिये जल्दी मत लौटना ।

प्रभास . धन्यवाद गीता, मैं जल्दी ही लौटूगा ।

(दृश्य परिवर्तन)

विभा : कितनी देर लगा दी प्रभास, सुनो एक···बड़ी अच्छी

विभा (हसती है) जीवन-मरण···तुम्हारे जीवन-मरण में मुझे कोई दिलचस्पी नही, मोहन···गुसल का इन्तजाम करो···मुझे रिहर्सल मे जाना है।

अजित विभा···सोच लो, तुम मेरे जीवन को नष्ट कर रही हो।

विभा मेरे पास यह सोचने का समय नही है···देख रहे हो मुझे कितनी देर हो गई है। (जाने का स्वर)

अजित विभावरी···

विभा नमस्कार।

(दृश्य परिवर्तन)

मंदाकिनी . भइया···बड़ी प्यास लगी है।

प्रभास : मेरी मदा···लो यह पानी, कैसी तबीयत है।

मंदाकिनी अच्छी ही है ··उनका कुछ पता चला ?

प्रभास : अभी तक तो कही से कोई खबर नही मिली।

मंदाकिनी कोई खबर नही मिली। कोई खबर मिलेगी भी भइया, आज दो महीने हो गये।

प्रभास : दो महीने हो गये, अजित को यहां से गये हुये ··दो महीने हो गये। न जाने किस अदृश्य मे लोप हो गया वह।

मंदाकिनी तुमने उन्हे रोका क्यो नही भइया।

प्रभास मदा, वह मुझसे मिला ही नही, मुझे तो विभा ने बतलाया कि वह कही चला गया।

मंदाकिनी विभा, दुष्ट कही की।

प्रभास नही, मदा···विभावरी को दोष मत दो। विभावरी ने केवल अपनी गलती सुधारी थी अजित को छोड़कर।

मंदाकिनी . भइया, विभा ने उन्हे नही छोड़ा था, तुम्हे अपनाया था,···तुम्हे अपनाया था।

(केशव और गीता का प्रवेश)

केशव : प्रभास, गीता आई है, मदाकिनी को देखने।

पास तो अभी चौदह घण्टे का समय है, प्लेन रात को बारह बजे जाता है यहां से।

प्रभास विभा···मैं न जा सकूंगा।

विभा : न जा सकोगे? क्या कह रहे हो? न जा सकोगे?

प्रभास : हां, मुझे दुख है कि मैं न चल सकूंगा तुम्हारे साथ।

विभा : (विराम) तो मैं कुंवर कमल नाथ से दो एक दिन रुकने को कह दूं?

प्रभास : नहीं विभा, मैं चल ही नहीं सकूंगा तुम्हारे साथ··· हम लोगों का साथ छूटने ही में मेरा कल्याण था और इसका अवसर भी आ गया।

विभा : प्रभास···क्या हो गया है तुम्हें? अगर तुम कहो तो मैं कुंवर कमल नाथ से अपना कान्ट्रेक्ट रद्द कर दूं।

प्रभास नहीं विभा, तुम जाओ उनके साथ, तुम्हें एक साथी की आवश्यकता है···मैं तुम्हारा साथ न दे सकूंगा।

विभा : तो क्या तुम मुझे छोड़ रहे हो, प्रभास?

प्रभास · छोड़ता कोई किसी को नहीं है विभा, लोग मिलते हैं, लोग छूट जाते है। भगवान तुम्हारा भला करे···अब तुमसे विदा लेता हूं।

विभा : प्रभास, प्रभास···

प्रभास : नहीं विभा, मोह के बन्धन तोड दिये हैं मैंने···विदा।

(दृश्य परिवर्तन)

केशव : बड़ी जल्दी लौट आये प्रभास?

प्रभास : (भर्राये गले से) हा, केशव, आखिर लौट ही आया।

मंदाकिनी : क्यों भइया, स्वर क्यों विचलित है, आंखें क्यों तरल है?

प्रभास : कुछ नहीं मंदा।

केशव : मैं बतलाऊं···विभावरी कुंवर कमल नाथ के साथ यूरोप जा रही है प्रभास को छोड़कर।

मंदाकिनी : देखूं-देखूं अखबार (पढ़ती है) कला

प्रभास : वह क्या ?

विभा : तुम जानते हो, कला केन्द्र नाटक कम्पनी यूरोप टूर को जा रही है ।

प्रभास : कला केन्द्र-नाटक कम्पनी···कुवर कमल नाथ वाली कम्पनी ? मेरा तो ख्याल था कि वह चली गयी ।

विभा हा, वह तो जहाज से गई है लेकिन कुवर कमल नाथ अभी यही है वह कल दिल्ली से हवाई जहाज से जायेगे ।

प्रभास : अच्छा तो ।

विभा · वे मेरे पास कल रात आये थे, मुझे हीरोइन के रूप में लेने के लिए, मैंने उनसे कहा कि मै तभी चल सकती हूं जब प्रभास भी कम्पनी के लेखक के रूप मे चले ।

प्रभास फिर ?

विभा : उन्होने मंजूर कर लिया। आज रात को हवाई जहाज से दिल्ली चलना है ।

प्रभास : आज रात को ही हवाई जहाज से दिल्ली चलना है··· विभा क्यो दो चार दिन के लिए यह चलना और नहीं रुक सकता ?

विभा : नही प्रभास···आज रात ही चलना है, मैंने सब इन्तजाम कर लिया है ।

प्रभास : (ठण्डी सास भरता है) विभा, क्या तुम दूसरे की सुविधा असुविधा नही देख सकती ?

विभा : सुविधा और असुविधा अपने मन की चीज है । जब चलना ही है तब सोच विचार और देर सबेर की बात ही व्यर्थ है ।

प्रभास : फिर भी मुझे कुछ समय तो मिलना चाहिए ।

विभा : (हंसती है) प्रभास···जीवन की सबसे बड़ी यात्रा मृत्यु के लिए कब समय मिलता है किसी को ? तुम्हारे

कुवर कमलनाथ कल हवाई जहाज से नगर की सुप्रसिद्ध तारिका विभावरी के साथ दिल्ली होते हुए यूरोप जा रहे है ''सुना भइया।

प्रभास. हा मदा, वह आज रात जा रही है। यही कहने के लिए उसने मुझे बुलाया था।

केशव · चलो, तुम्हारा पागलपन तो दूर हो गया।

प्रभास पागलपन ?···शायद तुम ठीक कहते हो, तुम्हे नही मालूम ''

गीता . क्यो ? कहते-कहते रुक क्यो गए ?

प्रभास इसलिए कि तुम लोग नही समझ सकोगे, क्षमा करना गीता बहुत सम्भव है तुम समझ भी सको, लेकिन यह बात विभावरी की है, और इसलिए मैं उस बात को किसी से न कहूगा।

मंदाकिनी · भइया।

प्रभास : मदा, हम लोगो को आज रात की गाडी से ही चल देना है पता नही कब तक चलना है, लेकिन चलते-चलते मै थक गया हूं···बुरी तरह थक गया हू।

□

विकास प्रिंटर्स, गीता कालोनी, मेन रोड, दिल्ली 5812